अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

जैन श्रावक और दीपावली पर्व

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–5 (6)
(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष–2022–23 की मंगल प्रस्तुति)

जैन श्रावक और दीपावली पर्व

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ प्रकाशन

ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण

.. शास्त्र विक्रय.. ज्ञानावरणस्यास्रवा: श्रुतात्स्याच्छ्रुतकेवली।

शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है तथा शास्त्रदान से श्रुतकेवली होता है ऐसा आगम वाक्य है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला से प्रकाशित श्रुत साहित्य का विक्रय नहीं किया जाता। सभी स्वाध्यायी जीवों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–5 (6)

कृति	: जैन श्रावक और दीपावली पर्व
शुभाशीष	: प.पू. शुद्धोपयोगी सन्त, सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
कृतिकार	: श्रमणाचार्य विमर्शसागर
प्रस्तुति	: बा.ब्र. विशु दीदी
प्रकाशक	: जिनागम पंथ ग्रंथमाला
संस्करण	: षष्ठ, 2023
प्रतियाँ	: 1000
I.S.B.N.	: 978-93-6013-837-0
मुद्रक	: अरिहन्त ग्रॉफिक्स, दिल्ली मो. 9958819046

© जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन

प्राप्ति स्थान :

- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  बड़ा जैन मंदिर, बाराबंकी (उ.प्र.)
  नमन जैन मो. 9160855511
- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  छिंदवाड़ा (म.प्र.)
  मो. 9425146667
- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  श्री महावीर दि. जैन मंदिर
  श्रमणपुर, लखनादौन (म.प्र.)
  मो. 9425146667
- **राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच**
  भिण्ड (म.प्र.)
  मो. 9826217291
- **डॉ. विश्वजीत कोटिया**
  आगरा (उ.प्र.)
  मो. 9412163166
- **अरिन्जय जैन**
  दिल्ली
  मो. 9810099002

भगवान् महावीर स्वामी एवं गौतमस्वामी के
'पच्चीस सौ पचासवाँ'
निर्वाणोत्सव एवं केवलज्ञान महोत्सव
दीपावली पर्व के पावन अवसर पर
सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी के
करकमलों में सादर-समर्पित।

आद्याक्षर

भारतवर्ष की सनातन संस्कृति के महोन्नत भाल पर दैदीप्यमान तिलक की भाँति चारुत्व को प्राप्त दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा सदैव से आर्यजनों द्वारा शेषाक्षत की भाँति वंदनीय रही है। महानता को सही मायनों में जीवंत करनेवाले महनीय तपोधनों की गुणाढ्य संतति में समय-समय पर अनेकों धुरंधर जैनाचार्यों का उद्‌भव हुआ जिन्होंने अपनी दर्पणसम अविकार वृत्ति, अनुत्तम ज्ञान साधना एवं सुरोपासित अटल श्रद्धान् के द्वारा समय के पटल पर अपनी यश प्रशस्तियाँ अंकित की हैं। इन्हीं महात्माओं के सुवंश में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से 21वीं सदी को गौरवान्वित करनेवाले चर्या और चिंतन के धनी, साधनापथ पर कदम-दर-कदम अपनी साधना से अनुमार्गियों के लिये नूतन प्रकाश स्तम्भ स्थापित करनेवाले श्रमणकुल से वंदनीय, देव कुलार्चनीय परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज एक असाधारण चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी आचार्य हैं। जिनकी परम वीतरागी सौम्यमुद्रा का दर्शन मात्र ही भव्यों के जीवन में वैराग्य का अंकुरण करनेवाला है। आपके वात्सल्य, अनुशासन और निर्दोष चर्या से प्रभावित हो अनेकों शिवेक्षु आत्मविज्ञान के साथ मोक्षमार्ग की साधना में आपके सुपथगामी हुये हैं। आपके श्रेष्ठ निर्यापकाचार्यत्व में अनेकों श्रमण-श्रमणी एवं भव्य मुमुक्षुओं ने सल्लेखना पूर्वक उत्तम समाधि की साधना की है।

जिनका दिव्य पादमूल श्रेष्ठतम वरदानों का आनंद स्थल है, ऐसे प्रज्ञामनीषी पूज्य आचार्यश्री का यशोमयी सृजत्व भी युगपरिवर्तन की ऊर्जा से सम्पन्न है, जो दिग्भ्रमित जनमानस को समीचीन पथ का पाथेय प्रदान करता है। पूज्य आचार्य प्रवर ने अपने साहित्य में हर दृष्टिकोण से धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय मूल्यों के समुन्नयन का संपुट प्रदान किया है। पूज्यश्री के साहित्य के हर पृष्ठ पर होती है सरसता, हर लाइन में पिरो देते हैं वो रोचकता, हर शब्द करता है अंतस् को आन्दोलित और अक्षर-अक्षर में छिपा होता है जीवन विकास का परम संदेश।

''जीवन है पानी की बूँद'' महाकाव्य–पूज्यश्री की लेखनी से सन् 1997, भिण्ड में हिन्दी काव्यजगत का सर्वाधिक लोकप्रिय, कुरल शैली का महाकाव्य 'जीवन है पानी की बूँद' सृजित हुआ। आचार्य भगवन् की मूल कृति यह महाकाव्य इतना अधिक लोकप्रिय है कि देश–विदेश में जैन समुदाय का कोई भी धार्मिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, जबतक उसमें इस अमर काव्य की पंक्तियाँ न गुनगुनाई जायें तबतक वह अनुष्ठान अधूरा–सा प्रतीत होता है।

दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा के अनेकों साधु भगवंत, त्यागीवृन्द, विद्वान् और संगीतकार इस महाकाव्य पर नूतन–नूतन हजारों छंद लिखकर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, यह इस कालजयी महाकाव्य की लोकप्रियता का एक सशक्त उदाहरण है। इस महाकाव्य पर अनेकों शोधार्थी P.H.D. कर रहे हैं। पूज्यश्री के इस महाकाव्य पर देश के मूर्धन्य जैन, अजैन विद्वानों एवं साहित्यकारों द्वारा अनेक विद्वत् संगोष्ठियाँ सम्पन्न की जा चुकी हैं।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, उर्दू, अंग्रेजी, राजस्थानी, हाड़ौती, बुंदेली, अवधि, आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता एवं हिन्दी के साथ–साथ प्राकृत, संस्कृत, उर्दू आदि अनेक भाषाओं में साधिकार कलम चलानेवाले, संत परम्परा के वरिष्ठ साहित्यकार परम पूज्यनीय भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज द्वारा जहाँ एक ओर जैनदर्शन के अनेकों मूलग्रंथों का मौलिक छंदों में पद्यानुवाद कर आचार्य भगवन् कुंदकुंद और पूज्यपाद की परम्परा को पुष्ट किया गया है वहीं दूसरी ओर उनकी लेखनी से सृजित सैकड़ों बोधप्रद कवितायें, आध्यात्मिक भजन एवं सवैया, मुक्तक, हाइकू, नई कविता आदि अनेक विधाओं पर सैकड़ों प्रकीर्णक रचनायें हिन्दी काव्य परम्परा के कोष की समृद्धि बन पड़ी हैं। सिर्फ हिन्दी ही नहीं पूज्य आचार्यश्री ने उर्दू में साधिक 200 गजलों का प्रणयन कर उर्दू साहित्य में भी अद्‌भुत कीर्तिमान स्थापित किया है।

अभीक्ष्ण ज्ञान साधना का अमृतफल 'अप्पोदया' प्राकृत टीका– श्रुत संवर्धन के लिये समर्पित पूज्य आचार्यश्री की प्रज्ञ लेखनी ने पूज्य आचार्य

भगवन् श्री अमितगति स्वामी कृत सहस्र वर्ष प्राचीन 'श्री योगसार प्राभृत' ग्रंथ पर प्राकृत भाषा में "**अप्पोदया**" नामक सहस्र पृष्ठीय वृहद टीका का सृजन कर श्रुत संस्कृति के क्षेत्र में एक स्वर्णिम इतिहास रचा है। देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं श्रमण जगत के द्वारा समादृत आपकी यह "**अप्पोदया**" प्राकृत टीका अध्यात्म का एक वृहद कोष है, जो आपकी अभीक्ष्ण ज्ञान साधना का ही अमृतफल है।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी पूज्य गुरुदेव के विराट कृतित्व में अनेक विधायें केली करती हैं। पूज्य आचार्यश्री ने जहाँ एक ओर अपने लेखन से आरातिय श्रुत को बल प्रदान किया है, वहीं दूजी ओर '**विमर्श लिपि**' एवं '**विमर्श अंकलिपि**' का सृजन कर समुचि श्रमण संस्कृति का मस्तक ऊँचा किया है। साथ ही पूर्णत: मौलिक शब्द, व्याकरण आदि से सम्पन्न नवीन भाषा '**विमर्श एम्बिसा**' का निर्माण कर आपने इतिहास के पृष्ठों पर एक अमिट लेख लिख दिया है।

जैन एकता के लिये दिव्यावदान– पूज्य आचार्यश्री ने "**जिनागम पंथ जयवंत हो**" का नारा देकर संतवाद, पंथवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती जैन संस्कृति को एकता के सूत्र में बाँधने का स्तुत्य कार्य किया है।

पूज्य आचार्यश्री का काव्य सर्जना में श्रम कौशल वरेण्य है। आपकी एक प्रेरक काव्य रचना "**देश और धर्म के लिये जिओ**" को मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा कक्षा-11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक '**मकरन्द**' के पाठ्यक्रम में एवं एक सुखद अनुभूतियों का एहसास 'माँ' यह रचना कक्षा 8 की एटग्रेट अभ्यास पुस्तिका 'भाषा भारती' में प्रकाशित किया गया है, यह श्रमण संस्कृति के स्वाभिमान का विषय है।

सिद्धक्षेत्र श्री अहारजी में आपश्री को अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम श्री शान्तिभक्ति की महान सिद्धि प्राप्त हुई, जिससे प्रभावित हो यक्षों द्वारा की गई महापूजा और नाम दिया गया '**भावलिंगी संत**' एवं '**अहार जी के छोटे बाबा**'। यह सम्पूर्ण कथानक आपकी सच्ची भावसाधना का अमिट शिलालेख है।

दिगम्बर श्रमण परम्परा के महान प्रतिष्ठाचार्य, पूज्य आचार्य भगवन् जैसे महान् संत जगत में विरलप्राय: हैं। अनेकान्तिनी प्रतिभा के ससक्त हस्ताक्षर, प्रेम, दया, करुणा, वात्सल्य की अपरिसीम संवेदनाओं से छलकता हृदय, सरलता और सहजता का प्रतिनिधित्व करता जीवन, महानता के सर्वोच्च शिखर पर लघुता के स्वर ये पूज्य आचार्यश्री के जीवन की कुछ ऐसी दुर्लभतम विशेषतायें हैं जो उन्हें सहज ही आम संतों की भीड़ में एक जुदा संत की पहिचान देती हैं।

परम पूज्यनीय शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज के अग्रगण्य शिष्यों में परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज एक अद्वितीय प्रतिभाशील सहज साधक हैं। गुरुआज्ञा, अनुशासन और स्वयोग्यता से आपने अपनी निर्वाण दीक्षा के 25 वर्षों में जो कद प्राप्त किया है, वहाँ तक कोई विरला संत ही पहुँच पाता है। आपने अपनी साधनाकाल के विगत 27 वर्षों में पूरे देश में परिभ्रमण कर अनेकों पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें, वेदी प्रतिष्ठायें, श्री कल्पद्रुम, समोशरण, इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र आदि वृहद स्तरीय विधान, अनेक जिनालयों का जीर्णोद्धार, संत शालाओं का निर्माण, जिनागम पंथ ग्रंथालयों की स्थापना आदि कराके जिनागम पंथ का ध्वज घर-घर में स्थापित किया है।

पूज्य आचार्यश्री कहते हैं- जिनवाणी हमारी माँ है, उसपर मूल्य अंकित कर उसका विक्रय नहीं करना चाहिए। जिनवाणी का विक्रय करने से ज्ञानावरणी कर्म का आस्रव-बंध होता है। अत: पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से ''**जिनागम पंथ ग्रंथमाला**'' की स्थापना की गई है। इस ग्रंथमाला से प्रकाशित साहित्य साधु भगवंतों एवं स्वाध्यायी जनों के लिये नि:शुल्क भेंट किया जाता है। आचार्यश्री की यह सद्प्रेरणा निश्चित ही समाज को नया चिंतन एवं नई दिशा देगी।

आपके शुभाशीष से ''**राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)**'' एवं ''**जिनागम पंथी श्रावक संघ**'' ये दो संगठन देशभर में मानव सेवा, देशसेवा और धर्म प्रभावना के क्षेत्र में समाज की महत् उपलब्धि बन चुके हैं।

आपके सानिध्य में आयोजित, जिनागम शिक्षण शिविर, विमर्श कैम्प, पूजन प्रशिक्षण शिविर (आनंद महोत्सव), विद्वत् संगोष्ठियाँ, साहित्यकार सम्मेलन, मंच के सेमिनार आदि के माध्यम से समाज में संस्कारों का शंखनाद किया जा रहा है।

आपकी रजत साधना के ये पच्चीस वर्ष निश्चित रूप से देश, समाज, धर्म और समुचि मानवता के लिये किसी दिव्य वरदान से कम नहीं है।

अत: आपके ''**रजत संयमोत्सव**'' एवं ''**स्वर्णिम विमर्श उत्सव**'' के अवसर पर अखिल भारतीय शास्त्री परिषद, विमर्श गुरुभक्तों एवं शिष्यों ने यह भाव सँजोया है कि आपका समूचा साहित्य प्रकाशित हो ताकि जन-जन आपके अवदान से लाभान्वित हो सकें, साथ ही कुछ प्राचीन आचार्यों के मूल ग्रंथों के प्रकाशन का भी बीड़ा उठाया है। यह समूचा साहित्य प्रकाशन का कार्य ''**जिनागम पंथ ग्रंथमाला**'' के तहत सम्पन्न किया जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री का यह साहित्य जन-जन के मन को आलोकित करता रहे। इसी सुमंगल भावना के साथ शब्द विराम।

चूँकि ग्रंथ प्रकाशन में संशोधन एवं संपादन का कार्य अत्यंत श्रमसाध्य है, पूज्य गुरुदेव के इस पावन युगल प्रसंग पर प्रकाशित सभी शास्त्रों की प्रूफ रीडिंग एवं साजसज्जा के कार्य में संघस्थ मुनिराज, आर्यिका मातायें, त्यागी व्रती एवं विद्वत् वर्ग ने अपना अमूल्य समय देकर श्रुतसेवा के इस कार्य में श्लाघनीय योगदान दिया है, जो उनकी गुरुभक्ति और श्रुतभक्ति का अनुपम उदाहरण है। **जिनागम पंथ ग्रंथमाला** एवं **ग्रंथ प्रकाशन समिति** आप सभी के प्रति हृदय से आभार ज्ञापित करती है।

परिचय की वीथिकाओं में

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	:	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	:	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू. आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज-राजेश जैन, अनुज-चक्रेश जैन)
भगिनी	:	दो (अग्रजा-श्रीमती कमला जैन, अनुजा-बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ)
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता—दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री—श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणा भाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यंत प्रभावित किया। (सन्-1995, स्थान-मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू, प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान् शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी,

सोमवार संवत् 2051, दिनांक 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा : आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान- क्षेत्रपाल जी ललितपुर (उ.प्र.), दिनांक 3 अगस्त 1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा : फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागरजी।

मुनि दीक्षा : पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनिदीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित : आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005, रविवार को कुन्थुगिरी में गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छिओं के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार : मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067, रविवार, दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा (राजस्थान) में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शान्ति भक्ति की सिद्धि : 25 दिसम्बर 2015, सिद्धक्षेत्र अहार जी में भगवान् श्री शान्तिनाथ स्वामी के अतिशयकारी पादमूल में, संघस्थ बा.ब्र. विशु दीदी की असाध्य बीमारी (रोग) से करुणान्वित हो पूज्य गुरुदेव ने जब लगभग 1400 वर्ष प्राचीन आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित शान्त्यष्टक का भावपूर्वक पाठ किया तो देखते ही देखते क्षण मात्र में दीदी असाध्य रोग से मुक्त हो गईं। तब क्षेत्र के यक्ष-यक्षणियों द्वारा गुरुदेव की महापूजा की गई और सूचित किया कि आपको अपनी निर्मल साधना से इस पंचमकाल में दुर्लभतम शान्ति भक्ति की सहज ही सिद्धि प्राप्त हुई है। साथ ही पूज्य गुरुदेव को **'भावलिंगी संत', 'अहार जी के छोटे बाबा', 'शान्तिप्रभु के लघुनंदन'** आदि संज्ञायें प्रदान कीं।

शब्दालंकार : रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महामुनिराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि– संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उत्तरप्रदेश के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको ''**वात्सल्य शिरोमणि**'' के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव– प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद ने आपको ''**श्रमण गौरव**'' की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु– वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्यश्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा वर्षायोग-2009 में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को ''**वात्सल्य सिन्धु**'' का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव– संतवाद, पंथवाद, जातिवाद और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से असम्पृक्त पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका चतुरानुयोग का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पूज्य गुरुदेव की गृहनगरी जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको ''**आचार्य पुंगव**'' की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी– पूज्य गुरुवर का ''**वैचारिक वैभव**'' सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: बिजयनगर (राज.) वर्षायोग-2012 में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित ''दिव्य संस्कार प्रवचन माला'' में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको ''**राष्ट्रयोगी**'' का अलंकार समर्पित किया गया।

सर्वोदयी संत– पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जनमानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है, तभी तो बिजयनगर (राज.) दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको ''**सर्वोदयी संत**'' की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी– श्रुताराधना के अनुपम आराधक, जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी

और कलम के अनूठे जादूगर पूज्यश्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन बिजयनगर (राज.) 2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको "**प्रज्ञामनीषी**" की उपाधि से विभूषित किया गया।

राष्ट्रहितैषी— उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सन् 2013 में आपको "**राष्ट्रहितैषी**" अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि— सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य "जीवन है पानी की बूँद" के शब्दशिल्पी, भजन, ग़ज़ल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्रनगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्यश्री को "**आदर्श महाकवि**" का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

चारित्र रथी— आत्मप्रदेशों में सच्चे भावलिंग की प्रतिष्ठा कर, आत्मरति और परविरति के साथ चारित्र रथ पर सवार हो पूज्य गुरुदेव आत्मोत्थान के सुपथ पर अबाध रीति से वर्धमान हैं। आपकी इस आत्मोन्नयन की निष्पंक चारित्र साधना से प्रभावित हो देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश 'सरल' जी ने बिजयनगर चातुर्मास 2012 में आपको "**चारित्र रथी**" का अलंकरण भेंट कर स्व गौरववर्धन किया।

जिनागम पंथ प्रवर्तक — वर्तमान में पंथवाद, संतवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती दिगम्बर जैन समाज में अनादि अनिधन "**जिनागम पंथ**" का उद्घोष कर पूज्य गुरुदेव ने जैन एकता के लिये एक महनीय कार्य किया है। पूज्य गुरुदेव के इस "**जैन यूनिटी मिशन**" से प्रभावित हो सन् 2020 में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं गजरथ महोत्सव के सुप्रसंग पर बा.ब्र. ऋषभ भैया (नागपुर) के मार्गदर्शन में सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी ने आपको "**जिनागम पंथ प्रवर्तक**" का अलंकरण भेंट कर आपके इस अभिनंद्य प्रयास की अभ्यर्थना की।

राष्ट्रगौरव— परम पूज्य भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज का अनुत्तम वैदुष्य जहाँ एक ओर धर्मनीति की प्रतिष्ठा करता है वहीं दूसरी ओर आपका क्रान्तिनिष्ठ मौलिक चिंतन, राजनीति, न्याय-नीति, मानव सेवा, शाकाहार, गौरक्षा, लोकतंत्र, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति जन जागरण कर संपूर्ण देश के लिये गौरव का विषय बन पड़ा है। पूज्य गुरूदेव के दिव्यावदानों से आज समुचा देश गौरवान्वित है। इसीलिये महमूदाबाद चातुर्मास 2021 में सम्पूर्ण अवध प्रान्त की जैन समाज की गरिमामयी उपस्थिति में कला और साहित्य की अखिल भारतीय संस्था एवं "**राष्ट्रीय स्वयं**

सेवक संघ'' के अनुसांगिक संगठन ''**संस्कार भारती**'' की ओर से माननीय श्री गिरीशचन्द्र मिश्र, राज्यमंत्री, उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पूज्य गुरुदेव को ''**राष्ट्रगौरव**'' का अलंकरण भेंट किया गया।

सौम्यमूर्ति— सौम्यता संत की साम्यता का प्रतिदर्श है, संत जितना साम्यता को प्राप्त होता जाता है, उसकी साधना में उतनी ही सौम्यता झलकने लगती है। परम पूज्यनीय भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यता की प्रतिमूर्ति हैं। पूज्य आचार्य प्रवर की सौम्य चर्या से अभिभूत सकल दिगम्बर जैन समाज एटा द्वारा स्वर्णिम विमर्श उत्सव (15/11/2022) के पावन प्रसंग पर आपको ''**सौम्यमूर्ति**'' अलंकरण से संबोधित कर स्वयं का सौभाग्यवर्धन किया गया।

आचार्यरत्न— निर्वाण दीक्षा की मात्र 7 वर्षों की निर्मल साधना का प्रतिफल जो दीक्षा गुरु द्वारा आपको देश के 14 बड़े आचार्य एवं 200 पिच्छीधारी साधुओं की गरिमामयी उपस्थिति में आचार्य पद की घोषणा की गई। यह श्रमण परम्परा के लिये एक स्वर्णिम अध्याय का श्रीगणेश था। सम्प्रति द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव की जटिलताओं के मध्य अपने चिंतन के हाइटेक संरक्षण से चतुर्विध संघ के उन्नयन, संवर्धन एवं मार्गदर्शन में आपका कोई शानी नहीं। आचार्य पद की विराट गरिमा से सम्पन्न आपके महनीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सकल दिगम्बर जैन समाज आगरा एवं दिगम्बर जैन परिषद आगरा द्वारा आपके रजत संयमोत्सव पर आपको ''**आचार्यरत्न**''अलंकरण प्रदान किया गया।

बुंदेलखण्ड गौरव—बुंदेलखण्ड की पुण्यकोख से अनेक जैन-जैनेतर संतों ने जन्म लेकर इस भूमि का मानवर्धन किया है। इसी संत श्रृंखला में एक स्वर्णिम कड़ी जोड़ने वाले दिगम्बराचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज है। जिनके सृजन में लीक से हटकर कुछ करने का जज्बा है, जिनके कृतित्व ने आज पूरे विश्व में श्रमण परम्परा को प्रतिष्ठा दिलाई है, ऐसे महान संत के अविस्मरणीय अवदानों से सिर्फ जन्मभूमि जतारा ही नहीं पूरा बुंदेलखण्ड गौरववंत है। आचार्य भगवन के रजत संयमोत्सव पर जतारा जैन समाज सहित बुंदेलखण्ड की समस्त दिगम्बर जैन समाज द्वारा आपको ''**बुंदेलखण्ड गौरव**'' शब्दालंकरण भेंट किया गया।

साहित्यिक यात्रा

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यवदन, गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य पाठ संग्रह —

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. मानतुंग के मोती
3. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
4. गीताञ्जलि (भजन)

5. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
6. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
7. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
8. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
9. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
10. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
11. समर्पण के स्वर (काव्य)
12. आईना (काव्य)
13. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
14. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
15. वाह क्या खूब कही (काव्य)
16. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
17. आओ सीखें जिनस्तोत्र
18. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
19. उपासक संस्कार

प्रवचन साहित्य :

1. रयणोदय (प्रथम भाग)
2. रयणोदय (द्वितीय भाग)
3. रयणोदय (तृतीय भाग)
4. रयणोदय (चतुर्थ भाग)
5. रयणोदय (पंचम भाग)
6. योगोदय (प्रथम भाग)
7. योगोदय (द्वितीय भाग)
8. उपासकोदय (प्रथम भाग)
9. उपासकोदय (द्वितीय भाग)
10. देशव्रतोदय
11. साम्योदय (प्रथम भाग)
12. साम्योदय (द्वितीय भाग)
13. रत्नोदय (प्रथम भाग)
14. ज्ञानोदय
15. इष्टोदय (प्रथम भाग)
16. इष्टोदय (द्वितीय भाग)
17. दानोदय
18. गूँगी चीख
19. भरत जी घर में वैरागी
20. शब्द शब्द अमृत
21. शंका की एक रात

प्रेरक साहित्य :

1. जनवरी विमर्श
2. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
3. विमर्श हस्ताक्षर

ग़ज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

1. आचार्य विरागसागर विधान
2. एकीभाव विधान
3. श्री भक्तामर विधान (3)
4. विषापहार विधान
5. श्री कल्याण मंदिर विधान
6. श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत ग्रंथ पर :

1. अप्पोदया (प्राकृत टीका)
2. आत्मोदया (हिन्दी टीका)

महाकाव्य :

"जीवन है पानी की बूँद" (महाकाव्य)– पूज्य गुरुदेव इस अमर महाकाव्य के मूल रचयिता है। पूज्यश्री के इस बहुचर्चित महाकाव्य पर अनेकों साधु-भगवंत, विद्वान् एवं संगीतकार बहुसंख्या में नवीन छंदों का सृजन कर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, जो इस महाकाव्य की लोकप्रियता का अनुपम उदाहरण है।

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

प्राकृत साहित्य : 1. शुद्धप्पाणुवेक्खा 2. सरूव शुदि

पद्यानुवाद:

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभू स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. योगसार
16. उपासक संस्कार
17. देशव्रतोद्योतन
18. ज्ञानांकुश
19. दानोपदेश

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-आचार्य विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्त्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक — आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय — राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

- **आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला**
- **जिनागम पंथ ग्रंथमाला**

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन

प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक —आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. समसामयिक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा -2018)।
8. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'ज़ाहिद की ग़ज़लें' कृति पर साहित्यकार सम्मेलन (छिंदवाड़ा 2018)
9. आचार्यश्री विमर्शसागर जी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (दुर्ग 2019)।
10. आचार्य श्री विमर्शसागर जी कृत 'अप्पोदया' प्राकृत टीका पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (गाजियाबाद-2022)
11. आचार्य श्री विमर्शसागर जी कृत 'अप्पोदया' प्राकृत टीका पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (जतारा-2023)

आनन्द महोत्सव (पूजन प्रशिक्षण शिविर)— आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित 'आनन्द महोत्सव' एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 24 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं—

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. बिजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)

17. बड़ौत (उ.प्र.)	18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)	20. जबलपुर (म.प्र.)
21. लखनादौन (म.प्र.)	22. छिंदवाड़ा (म.प्र.)
23. दुर्ग (छत्तीसगढ़)	24. फतेहपुर (उ.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस, सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक, रथ महोत्सव-2004 (बूँदी, राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, कोटा ,राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव 2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव 2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)
15. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, रथ महोत्सव-2021 (महमूदाबाद उ.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.)	—	1996
2. भिण्ड (म.प्र.)	—	1997
3. भिण्ड (म.प्र.)	—	1998
4. भिण्ड (म.प्र.)	—	1999
5. महरौनी (उ.प्र.)	—	2000
6. अंकुर कॉलोनी (सागर, म.प्र.)	—	2001
7. सतना (म.प्र.)	—	2002
8. अशोकनगर (म.प्र.)	—	2003
9. रामगंजमण्डी (राज.)	—	2004
10. सिंगोली (म.प्र.)	—	2005
11. कोटा (राज.)	—	2006
12. शिवपुरी (म.प्र.)	—	2007

13. आगरा (उ.प्र.) — 2008
14. एटा (उ.प्र.) — 2009
15. डूंगरपुर (राज.) — 2010
16. अशोकनगर (म.प्र.) — 2011
17. बिजयनगर (राज.) — 2012
18. भिण्ड (म.प्र.) — 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.) — 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.) — 2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.) — 2016
22. जबलपुर (म.प्र.) — 2017
23. छिंदवाड़ा (म.प्र.) — 2018
24. दुर्ग (छत्तीसगढ़) — 2019
25. बाराबंकी (उ.प्र.) — 2020
26. महमूदाबाद (उ.प्र.) — 2021
27. गाजियाबाद (उ.प्र.) — 2022
28. जतारा (म.प्र.) — 2023

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी, ''जिनागम पंथ प्रवर्तक'' आचार्यश्री पंथवाद-संतवाद-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करनेवाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देनेवाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है। आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्त्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

–श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. राष्ट्रयोगी : लेखक–श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. आँगन की तुलसी : लेखक–प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. जतारा का ध्रुवतारा : लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. भावलिंगी संत (महाकाव्य) : लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. विमर्श धाम (महाकाव्य) : लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र)
6. सर्वोदयी संत (महाकाव्य) : लेखक–श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. विमर्श महाभाष्य : लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. विमर्श वाटिका : लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. विमर्श भक्ति शतक : लेखिका–श्रीमती स्मृति जैन 'भारत',अशोकनगर (म.प्र.)
10. विमर्श शतक, : लेखक–पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. विमर्श वंदना : लेखक–कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, विजयनगर (राज.)
12. विमस्समहाकव्वं (प्राकृत) : लेखक–डॉ. उदयचंद जैन, उदयपुर (राज.)

विधान :

1. आचार्य विमर्शसागर विधान : लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान : लेखक-पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
3. भावलिंग संत विधान : लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)
5. विमर्श वात्सल्य (जबलपुर चातुर्मास 2017, स्मारिका)
6. विमर्श प्रभा (छिंदवाड़ा चातुर्मास 2018, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)
प्रधान संपादक–डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)
संपादिका–डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)
प्रबंध संपादक–डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)
संपादक–पं. सर्वेश शास्त्री, पं. संकेत जैन 'विवेक'

बहुचर्चित 'जीवन है पानी की बूँद' (महाकाव्य)
का उद्भव मूल रचयिता की कलम से...

बात 1997 भिण्ड चातुर्मास की है–

सूरज गुनगुनी धूप लेकर क्षितिज पर चमकने लगा। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ प्रभातकालीन आवश्यक भक्ति क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिदिन की भाँति परम पूज्य गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ नित्य क्रिया हेतु नसियाँ जी की ओर बढ़ते जा रहे थे।

पूज्य गुरुदेव के साथ मैं भी यथाक्रम ईर्यासमिति से चल रहा था, और काव्य में रुचि होने के कारण चिंतन को आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्नान करा रहा था। तभी अचानक चिंतन की गर्भस्थली में एक पंक्ति 'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे' का प्रसव हुआ, और मैं इस प्रसव की परमानंद अनुभूति का बारम्बार अनुभव करता हुआ स्मृति के दिव्य द्वार तक पहुँच गया। मैंने कभी 'होनी–अनहोनी' सीरियल देखा था, अत: होनी–अनहोनी शब्द को अपने काव्य में स्थान देने का विचार करता था, तभी अचानक नित्य क्रिया से लौटते समय चिंतन की गर्भस्थली से जुड़वाँ पंक्ति 'होनी–अनहोनी, हो–हो–2 कब क्या घट जाये रे' का प्रसव हुआ। मैं दोनों जुड़वाँ पंक्तियों का अनुभव करता हुआ, अंतरंग में गुरु आशीष की श्रद्धा से भर गया। अत: इस आध्यात्मिक भजन को पूर्ण करने में उपयोग लगाया। भजन की पूर्णता होते ही मैं पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचा, और विनयपूर्वक अपना चिंतन मधुर स्वर में गुरु चरणों में समर्पित किया। सच कहूँ, गुरुदेव ने अत्यंत आह्लाद से भरकर मुझे शुभाशीष दिया। गुरु का वह मंगल आशीष ही है कि इस आध्यात्मिक भजन ने सभी के कंठ को स्पर्शित किया, और इस समय का बहुचर्चित भजन कहलाया। जैन हों या अजैन सभी ने इसे समभाव से स्वीकारा, और मुझे अत्यंत श्रद्धा और प्यार से 'जीवन है पानी की बूँद' चिंतन के प्रणेता, इस नाम से पुकारने लगे।

यद्यपि इस भजन को जब अन्य साधु, विद्वान्, गीतकार, गायक, अपनी प्रशंसा के लिए अपनी रचना कहकर बोलने लगे, तब पूज्य गुरुदेव को यह कहना पड़ा, कि 'जीवन है पानी की बूँद' भजन तो विमर्शसागर जी की मूल गाथाएँ है जिस पर अन्य साधु, विद्वान्, गायक तो मात्र टीकायें लिख रहे हैं।

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे–ऽऽ
होनी–अनहोनी, हो–हो–2-कब क्या घट जाये रे ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा–लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।
ख्वाबों में तू क्यों, हो–हो–2 आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतकसम वृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न–सिकुड़न।
गोदी में पोता–पोती, खोज रहा बचपन यौवन।
बीते जीवन के, हो–हो–2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी।
बेटा बहु सोचें, हो हो–2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी–बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है।
भूखा प्यासा ही, हो–हो–2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य–पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है।
देहरी से बाहर, हो–हो–2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

कर तू प्रभु का ध्यान–बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान–बाबा, निज घट में भगवान।।

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पलभर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान–बाबा, खुद को तू पहिचान।।1।।

धन–वैभव यह महल–खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान–बाबा, कर ले धर्मध्यान।।2।।

कभी किसी का दिल दु:ख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जायें, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान–बाबा, कहलाता यह ज्ञान।।3।।

माता–पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान–बाबा, पाओगे सम्मान।।4।।

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान–बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान।।5।।

राग–द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान–बाबा, क्यों बनता नादान।।6।।

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना।।
क्यों तू करे गुमान–बाबा, क्यों तू करे गुमान।।7।।

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मरकर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान–बाबा, मिट जाये अज्ञान।।8।।

शान्तिनाथ कीर्तन

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्–2
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं – द्वार तुम्हारे–2
दे दो प्रभु जी – हमको सहारे–2
शान्तिनाथ भगवन्–भगवन्–भगवन्ऽऽ
जय हो.......

छवि वीतरागी–प्यारी प्यारी लागे–2
दरश जो पाया–धन्य भाग जागे–2
चरणों करूँ नमन–नमन–नमनऽऽ
जय हो.......

सर्वज्ञ स्वामी–शरण में आया–2,
कहीं न मिला जो–वह सुख पाया
हर्षित हुए नयन–नयन–नयनऽऽ
जय हो.......

हित उपदेशी–आप कहाते–2
हम गुण गाने–भक्त बन जाते–2
छोड़ूँ न अब चरण–चरण–चरणऽऽ
जय हो.......

अहार जी के – बाबा कहाते–2
यक्ष यक्षिणी भी–सिर को नवाते–2
झुकते हैं मुनिगण–मुनिगण–मुनिगणऽऽ
जय हो.......

दुखिया हो कोई–द्वार पे आये–2
हँसता हुआ ही–द्वार से जाये–2
श्रद्धा हो पावन–पावन–पावनऽऽ
जय हो.......

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

गुरुदेव मेरे आप बस, इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए।।

सोचूँ सदा अपना सुहित, नहिं काम क्रोध विकार हो।
हे नाथ ! गुरु आदेश का, पालन सदा स्वीकार हो।
सिर पर मेरे आशीष का, शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव...

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ, नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा।
सीता सुदर्शन सम बनूँ, निज आत्मसौख्य चखूँ सदा।
माता सुता बहिना पिता, दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव...

सच्चा समर्पण भाव हो, नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो।
विश्वासघात ना हम करें, हर श्वाँस में सौगंध हो।
हे नाथ! गुरु विश्वास की, डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव...

जागे न मन में वासना, मन में कषायें न जगें।
हो वात्सल्य हृदय सदा, कर्त्तव्य से न कभी डिगें।
गुरुभक्ति की सरिता बहे, निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव...

भावों में निश्छलता रहे, छल की रहे न भावना।
गुरु पादमूल शरण मिले, करते हैं हम नित कामना।
जिनधर्म जिनआज्ञा सुगुरु, सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव...

उपकार जो मुझ पर किये, गुरुवर भुला न पायेंगे।
जब तक है तन में श्वाँस हम, उपकार गुरु के गायेंगे।
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी, ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव...

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से, सुरभित रहे मम साधना।
आचार की मर्यादा ही, हे नाथ ! हो आराधना।
स्वर-स्वर समाधिभाव का, चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं, जिनकी यह रचना म.प्र. शिक्षा बोर्ड द्वारा कक्षा आठवीं की एटग्रेड अभ्यास पुस्तिका 'भाषा भारती' में प्रकाशित की गई है।

एक सुखद अनुभूति का एहसास

''माँ''

बेटा हो दुःख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
माँ के प्यार सा इस दुनियाँ में नहीं किसी का प्यार
ओ–ऽ ऽ माँ, प्यारी माँ–ऽऽ–ऽ

माँ की गोदी में बेटा जब चैन से सोता है।
बेटा जैसा और किसी का पुण्य न होता है।
किलकारी भर भरकर माँ का करता है दीदार

माँ के प्यार सा.....

बेटा जब–जब रोता है, माँ लोरी गाती है।
भूखी–प्यासी रहकर भी माँ, दूध पिलाती है।
चंदा–सूरज, अश्रु बहाते, पाने माँ का प्यार।

माँ के प्यार सा.....

कोठी–बँगला रुपया–पैसा, सब ऐशो–आराम।
माँ बिन सूना घर का आँगन, माँ को करो प्रणाम।
माँ ही घर की तुलसी है, रौनक, घर का श्रृंगार।

माँ के प्यार सा.....

जीवन–संगिनी पाकर माँ का प्यार भुलायेगा।
घर में दीवाली होगी पर खुशी न पायेगा।
माँ ही घर की दीवाली, होली, घर का त्यौहार।

माँ के प्यार सा.....

अपनी खुशियाँ कर न्यौछावर, देती है खुशियाँ।
बेटा समझे, न समझे, समझे न यह दुनियाँ।
माँ चलती काँटों पर, देती फूलों का उपहार।

माँ के प्यार सा.....

दुनिया छूट भी जाये, माँ का कभी न छूटे साथ।
माँ ने पकड़ा हाथ हमारा, पकड़ो माँ का हाथ।
सब तीरथ माँ चरणों में, बन जाओ श्रवण कुमार।

माँ के प्यार सा.....

राम, कृष्ण, महावीर ने माँ का मान बढ़ाया है।
जाँ देकर आजाद भगत ने, माँ को पाया है।
सदा चिरायु, सुखी रहो, भारत माँ करे पुकार।

माँ के प्यार सा.....

वर्तमान में जातिवाद-पंथवाद में बँटती हुई जैन समाज का ध्यान आकर्षित करनेवाली और सम्यक् बोध प्रदान करनेवाली

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य
श्री विमर्शसागर जी महाराज द्वारा रचित पंक्तियाँ

(1)

तेरा और बीस पंथ, उलझे हैं श्रावक संत,
कोई तेरा कोई बीस करते बढ़ाई हैं।
करते हैं राग-द्वेष, जानें नहीं धर्म लेश,
मंदिरों में खींचतान करते लड़ाई हैं॥
कर रहे धर्म लोप, मानते हैं धर्म गोप,
एक दूसरे की अहंकार की चढ़ाई है।
तेरा-बीस के बयान, जैसे हिन्द-पाकिस्तान
हाय जैन एकता भी आज लड़खड़ाई है॥

(2)

कोई है बघेरवाल, कोई खण्डेलवाल,
कोई अग्रवाल तो कोई परवार है।
कोई-कोई जैसवाल, कोई-कोई ओसवाल,
कोई पोरवाल कोई गोल श्रृंगार है॥
बंद हुये बोलचाल, वाल की खड़ी दीवाल,
जातियों का भूत सबके ही सिर सवार है।
मंदिरों में अब जैन कहीं दिखते ही नहीं,
मंदिरों पे अब जातियों का अधिकार है॥

(3)

जातिमद चढ़ रहा, पन्थभेद बढ़ रहा,
जहाँ देखो वहाँ राग-द्वेष की ही बात है।
महावीर हुये खण्डेलवाल, अग्रवाल,
आदि-आदि मंदिरों पे लिखा ये दिखात है॥
कहीं महावीर हुये तेरा पंथी, बीस पंथी,
धर्मात्माओं ने भी दी क्या सौगात है।
सोचा जब मैं भी महावीर को पहचान दूँ,
तो धरा महावीर रूप, मेरी क्या औकात है॥

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज
ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं, जिनकी यह रचना
म.प्र. शिक्षा बोर्ड ने कक्षा ग्यारहवीं की पुस्तक 'मकरन्द' में शामिल की है।

देश और धर्म के लिये जिओ

देश और धर्म के लिए जिओ-2
हर कदम-कदम पे सबको ले ।
एकता अखण्डता की बात ले ।।
शुभ - पवित्र लक्ष्य के लिए जिओ ।

देश..........

मातृभूमि पर भी हमको गर्व हो ।
मातृभूमि रक्षा एक पर्व हो ।।
ऐसे राष्ट्र पर्व के लिए जिओ ।

देश..........

श्रम सभी का एक मूलमंत्र हो ।
श्रम के लिए हर मनुज स्वतंत्र हो ।।
लोकलाज शर्म छोड़कर जिओ।

देश..........

हो अनाथ दुखिया अगर राह में ।
हो सहानुभूति हर निगाह में ।।
करुणा और प्रेम के लिए जिओ ।

देश..........

भाईचारा सबके दिल में हो सदा ।
कटुता घृणा बैरभाव हो विदा ।।
जीना श्रेष्ठ कर्म के लिए जिओ ।

देश..........

प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं, जिनके द्वारा सन् 2011 में नूतन लिपि का सृजन किया गया, जिसे 'विमर्श लिपि' की संज्ञा दी गई है।

विमर्श लिपि

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए
विमर्श लिपि (स्वर)	ന	ന̈	ɛ	ɛ̈	ω	ω̈	3
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	.	..	·	··	·	··	ɔ

	ऍ	ऐ	ओ	ऑ	औ	अं	अ:
विमर्श लिपि (स्वर)	3̆	3	ɛ	ɛ̆	ɛ	ന°	ന⊙
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	˘	ɔ	c	˘	ϵ	o	⊙

ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
3ε	3ε	8	8
c	ϵ		

व्यंजन

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
विमर्श लिपि	/.	\.	l.	≥.	≤.
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
विमर्श लिपि	g.	ℓ.	b.	q.	þ.
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
विमर्श लिपि	7.	L.	T.	Λ.	V.
		ड़ →	T̥.	Λ̥.	← ढ़

त वर्ग	त	थ	द	ध	न
विमर्श लिपि	T.	⊥.	+.	X.	0.
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म
विमर्श लिपि	0.	Q.	θ.	⦶.	⊗.
अंतस्थ	य	र	ल	व	
विमर्श लिपि	Y.	–.	8.	ɓ.	
ऊष्माण	श	ष	स	ह	
विमर्श लिपि	S.	S.	S.	H.	
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ		
विमर्श लिपि	ʂ.	Ŧ.	bþ.		

विमर्श लिपि में शब्द के नीचे लाईन होती है।
चिन्ह भी लाईन पर ऊपर नीचे आगे–पीछे रहता है।
जैसे

राम जाता है।	क्या राम जाता है?
–..⊗. b..T.. Hᵓ।	/Y.. –..⊗. b..T.. Hᵓ?

शांति भक्ति का अतिशय देख रोमांचित हूँ

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

संसारी जीव एक व्यापारी की तरह है, जो नित्य शुभ और अशुभ कर्म का संचय करता है, उनका फल भोगता है। अशुभ कर्म का फल दु:ख है। शुभ कर्म का फल सुख। मोक्षमार्ग शुभाशुभ कर्म से मुक्त अतीन्द्रिय सुख का साधन है। मोक्षमार्गी साधक प्रधानतया अतीन्द्रिय सुख के मार्ग का आश्रय करते हैं। कदाचित् शुभमार्ग का आश्रय कर अशुभ कर्म की शान्ति का उपाय भी करते हैं, जिनधर्म की प्रभावना करते हैं। जैसे 48 कोठरी में बंद आचार्य मानतुंग स्वामी ने आदिनाथ स्तुति की और ताले स्वयमेव खुल गये। आचार्य वादिराज स्वामी ने जिनस्तुति की और कुष्ठ रोग तत्काल ठीक हो गया। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने शांति स्तुति की और नेत्र ज्योति आ गई। कवि धनंजय ने आदि स्तुति की और पुत्र का विष तत्काल शान्त हो गया, पुत्र मानो सोते से जाग गया, जिनधर्म की भी महाप्रभावना हुई।

सच 25.12.2015 का दिन मैं कभी भूल नहीं सकता जब दोपहर सामायिक हेतु चतुर्दिक् कायोत्सर्ग कर मैं बैठने ही वाला था कि 15 दिन से अत्यन्त अस्वस्थ आँचल दीदी को संघस्थ दीदीयाँ व्हील चेयर से आशीर्वाद हेतु लाईं। पैरालाइसिस जैसी शिकायत होने से पैर-हाथ से तो असमर्थता थी ही, आज आँखों से दिखना एवं कानों से सुनना भी बंद हो गया था। अत्यन्त दयनीय हालत में दीदी को देखकर हृदय करुणा से द्रवित हो उठा। मन ही मन भगवान शांतिनाथ का स्मरण कर प्रभु से बोला - 'हे नाथ! 22 वर्षीय असाध्य रोग से पीड़ित आँचल दीदी की अस्वस्थता आँखों से देखी नहीं जाती। प्रसिद्ध डॉक्टर्स भी स्पष्ट मना कर चुके हैं कि दीदी अब कभी स्वस्थ नहीं हो सकतीं। हमारे मेडिकल साइंस में यह प्रथम केस है कि दीदी की रिपोर्ट नॉर्मल है और अस्वस्थता बढ़ती जा रही है। हे प्रभो! अब तो एकमात्र आपकी भक्ति ही शरण है। सच्चा भक्त आपकी भक्ति के फल से जब पूर्ण निरामय अवस्था को प्राप्त कर सकता है, तो इस रोग से मुक्ति क्यों नहीं मिलेगी।' मैं अत्यन्त करुणा से भरा हुआ आँचल दीदी से बोला - बेटा! मैं तुम्हें शांतिभक्ति सुना रहा हूँ, मेरी आज की यही सामायिक है, मैं भगवान शांतिनाथ को हृदयकमल पर विराजमान करके आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी का भक्ति से स्मरण कर, पूज्य आचार्य गुरुदेव विरागसागर जी का आशीष अनुभव कर अत्यन्त तन्मयता के साथ शांतिभक्ति का उच्चारण करने लगा। अपूर्व विशुद्धि अनुभव हो रही थी, रोम-रोम भक्ति रस में सराबोर था। तभी अचानक आँचल दीदी की आँखों में नेत्र ज्योति आ गई, कानों से स्पष्ट सुनाई देने लगा, मुख का टेढ़ापन दूर हो गया और निश्चल हाथ की अंगुलियाँ स्वयमेव खुल गईं, हाथ भी सहज चलने लगा। कमरे में जितने लोग थे, सभी जय-जयकार करने लगे। शांतिभक्ति का अतिशय देख सभी रोमांचित हो गये। आँचल

दीदी बोलीं – गुरुदेव! मेरा चेहरा पहले जैसा हो गया है। मैं पहले की तरह ही बोल रही हूँ न। मुझे पहले की तरह ही दिखाई एवं सुनाई भी दे रहा है। मैंने कहा – बेटा! यह सब भगवान शांतिनाथ की कृपा है। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! अब तो मैं आहार का शोधन भी कर सकती हूँ, और हाथों से आहार दे भी सकती हूँ, तभी उनका ध्यान अपने संवेदना शून्य पैर पर गया, बोलीं गुरुदेव! यदि मेरा पैर भी ठीक हो जाता तो मैं आपको जल्दी आहार दे पाती। मैंने कहा – बेटा! भगवान शांतिनाथ की भक्ति से वह भी शीघ्र ठीक होगा। मैंने पुनः दीदी को शांतिभक्ति सुनाना शुरू किया, दीदी भी साथ पढ़ने लगीं। अहो! अद्‌भुत आनन्द रस बहने लगा प्रभु की भक्ति करते। तभी दीदी के पैर की अंगुलियाँ चलने लगीं और दीदी अपने पैरों पर खड़ी हो गईं। व्हील चेयर को पीछे धकेल दिया और कमरे में ही चलने लगीं। अभी शांतिभक्ति पूर्ण नहीं हुई थी, अतः मैंने कहा – बेटा! भक्ति कर लो। सभी ने भावपूर्वक शांतिभक्ति पूर्ण की। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! ऐसा लग रहा है मानो सोकर उठी हूँ। गुरुदेव! मैं तो बिल्कुल ठीक हो गई। मैंने कहा – बेटा! शांतिभक्ति के प्रसाद से तुम ठीक हुई हो। दीदी बोलीं – गुरुदेव सब आपकी ही कृपा है।

कमरे में दीदी के माता–पिता भी उपस्थित थे। यह भक्ति का चमत्कार देख उनकी आँखों से खुशी के आँसू ढुलक रहे थे। मैंने कहा – अब सभी लोग भगवान शांतिनाथ के पास चलेंगे। एक बार वहाँ भी शांतिभक्ति का पाठ करेंगे। दीदी ने कहा – अब मैं व्हील चेयर से नहीं, पैदल ही चलूँगी। अहो! दीदी को पैदल चलते देख उपस्थित सैकड़ों भक्त जन आश्चर्य करने लगे। हमने शांति जिनालय में पुनः शांतिभक्ति का पाठ किया और भगवान शांतिनाथ के चरणों का भावपूर्वक स्पर्श कर आँचल दीदी को एवं संघस्थ सभी साधुओं को आशीर्वाद दिया। फिर हम सभी प.पू. सूरिगच्छाचार्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी के पास पहुँचे, वहाँ दीदी ने आचार्य वंदना की। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद दिया, और कहा – आहारजी में घटी यह अतिशयकारी घटना यहाँ चिरकाल तक गुंजायमान होती रहेगी।

सच, मैं बेहद रोमांचित और आनंदित हूँ। शांतिभक्ति का पाठ करते समय जो विशुद्धि और आनंद का अनुभव हुआ, वह शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। भक्ति का यह अतिशय चमत्कार स्मृति पटल पर बार–बार आता ही रहता है। जिनेन्द्र भक्ति का माहात्म्य यही तो है–

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

अर्थात् जिनेश्वर की स्तुति करने पर विघ्नों का समूह तथा शाकिनी, भूत, सर्प आदि की बाधाएँ क्षण भर में क्षय को प्राप्त हो जाती हैं और विष भी निर्विषता को प्राप्त होता है।

जानें क्या है जिनागम पंथ?

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

'जिनागम पंथ' अनादि–अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य–उपाध्याय–निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है। और जिनागम में कथित श्रमण–श्रावक धर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण–श्रावक धर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि, श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं, वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात्

जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग-द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागद्दोसप्प णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरहपंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ाने वाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरहपंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति-पूजा-लाभ के लिए नये-नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं। और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह-बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग-द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह-बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री-प्रेम-वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

।। जयदु जिणागम पंथो ।।

आइरिय-विमरसागरेण विरइदा

सरूव थुदी

उवओगमओ अप्पा अहं, जाणगसरूवो मम अहा।
णिद्दंदो अहमणिबंधो हं, आणंदकंद-सहज-महा।।
जाणिय सया दु संतमओ, णिय संतरस-पीउं सया।
णिय संतरस-लीणम्मि हं, णिय चेद-धुवरूवो अहा।।1।।

महसु असंखपदेसेसुं, भयवंत-अप्पा णिवसदि।
हं हुवमि परमप्पा सयं, परमप्प-रूवो विलसदि।।
हं सिद्धकुल-अंसो हुवमि, हु दंसावदि भविदव्वदा।
णिय सत्ति-अंसदो सिद्धो हं, दव्वस्स णिय णिय दव्वदा।।2।।

रागादि-भाव दु विगडीआ, दव्वम्मि णिय णवि दंसणं।
परदव्व-परभावाण दु, रूवम्मि चिद णवि फंसणं।।
पुहु सव्वदो विर सव्वदो, अवियाररूवो मम अहा,
हं पूर-सहजसहावदो, जो हु वीदरागमओ कहा।।3।।

गुण-दव्वदो हं धुवमहा, परिणमं णियदं पत्तो हं।
परिणदं अत्तमओ खलु, सत्तीए णियदओ अत्तो हं।।
कारण सयं हं कज्जमवि, सिवमग्गो मग्गफलं सयं।
हं भावलिंगी संतो जाणग- हुवमि सफल हु जीवणं।।4।।

भावलिंगी संत का स्वरूप

देहादि संग रहिओ, माणकसाएहिं सयल परिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ, स भावलिंगी हवे साहू ।।56।

– अष्टपाहुड

अर्थ – देहादि संग (परिग्रह) से रहित और मान कषाय के साथ सकल कषाय से रहित हो आत्मा अपनी आत्मा में लीन होता है वही भावलिंगी साधु होता है।

आचार्य विमर्शसागर विरचित

स्वरूप स्तुति

हूँ आत्मा उपयोगमय, ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा।
निर्द्वन्द हूँ निर्बन्ध हूँ, आनन्दकन्द सहज अहा।।
नित शान्तरसमय जानकर, निज शान्तरस नित पानकर।
निज शांतरस में लीन हूँ, ध्रुवरूप निज अनुभव अहा।।1।।

मेरे असंखप्रदेश में, भगवान् आतम बस रहा।
मैं हूँ स्वयं परमात्मा, परमात्मरूप विलस रहा।।
हूँ सिद्धकुल का अंश मैं, बतला रही भवितव्यता।
मैं सिद्ध शक्ति अंश से, निजद्रव्य की निज द्रव्यता।।2।।

रागादि भाव विकार का, निजद्रव्य में दर्शन नहीं।
परद्रव्य या परभाव का, चित् रूप स्पर्शन नहीं।।
सबसे पृथक् सबसे विलग, अविकार रूप मेरा अहा।
मैं पूर्ण सहज स्वभाव से, जो वीतरागमयी कहा।।3।।

हूँ द्रव्य–गुण से ध्रुव अहा, नित परिणमन को प्राप्त हूँ।
परिणमन निश्चय आप्तमय, शक्ति से निश्चय आप्त हूँ।।
कारण स्वयं हूँ कार्य भी, शिवमार्ग स्वयं हूँ मार्गफल।
मैं भावलिंगी संत हूँ, ज्ञायक हूँ मैं, जीवन सफल।।4।।

दिगम्बर साधु के समान कोई नहीं

साधुश्चारित्रहीनोऽपि समानो नान्यासाधुभिः।
भग्नोऽपि शातकुम्भस्य कुम्भो मृत्सना घटैरिव।।

अर्थ – प्रशंसनीय चारित्र से रहित होने पर भी दिगम्बर साधु अन्य साधुओं के समान नहीं होता जैसे कि सुवर्ण का घट फूट जाने पर भी मिट्टी के घटों के समान नहीं होता।

विमस्स—अट्ठगं (डॉ. उदयचन्द्र जैन कृत)

बधं पबंभ अदि णंद विराग मुत्तिं।
तित्थेस णायग जिणं सयलं च तित्थं।।
तच्चं अणंत सुविस्स विमस्स णंदं।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।1।।

अप्पं विसुद्ध परिणाम विमस्स णीरं।
णीरेज्ज जीवण जलं बहुमुल्ल खीरं।।
चक्खेदि सच्छ परमप्प रसं च णिच्चं।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।2।।

सारं च सार समयं समयं च सारं।
पत्तेज्ज सो णियमसार पहुत्त धीरं।।
णिम्मल्ल मल्ल मदिमल्ल सुदं च सुत्तं।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।3।।

रम्माहिरम्म कवि कम्म पहाण कव्वं।
गीएज्ज गीद जण खेत्त सु विज्ज विज्जे।।
मज्झप्पदेस अणुसिक्खण साल साले।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।4।।

आयार पूद सुविराग विराग सूरिं।
णाणं च दंसण चरित्त तवं च णीरं।।
णेदूणणिच्च रमदे हु विमस्स विमस्स छंदं।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।5।।

धुव्वो हु तारग जतार सुणंदणो सो।
सिप्पी इमो विविह कब्ब कलंस चंदो।
चारित्त सम्मग रही दु विमस्स सीलो।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।6।।

संपुण्ण सारद बई सुद आगमम्हि।
आरूढ़ हंस समणाइरियो विमस्सो।
लिप्पिं सिजेदि लिवि बंह विमस्स णामं
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।7।।

सामाण्ण धम्म अणुपालिद भावलिंगी।
झाणे तवे समयसार समे णिमग्गो।
मग्गटपभावण गुणी सुद-सेवि-साधुं।
णम्मेमि रट्ठिग सुजोगि विमस्स सूरिं।।8।।

विमस्स उदयो चंदो, विमस्से सम संतए।
दंसेदि सावगाणं च, वाए वागेसरी समे।।

अनुक्रमणिका

• जैन श्रावक और दीपावली पर्व 1

दीपावली को प्रभातकाल में की जानेवाली आराधना, क्रिया-विधि 27

• श्री सुप्रभात स्तोत्र (संस्कृत) 29
• श्री सुप्रभात स्तोत्र (हिन्दी) 31
• श्री महावीराष्टक स्तोत्र (संस्कृत) 35
• श्री महावीराष्टक स्तोत्र (हिन्दी) 37
• श्री नवदेवता स्तोत्र—मंगलाष्टक 38
• लघु अभिषेक पाठ 40
• लघु शान्तिधारा 44
• विनय पाठ 47
• पूजा पीठिका, मंगल विधान 50
• कल्याणकादि अर्घ 51
• पूजा प्रतिज्ञा पाठ 52
• स्वस्ति मंगल, परमर्षिस्वस्ति-मंगल 53
• देव-शास्त्र-गुरु पूजा 54
• श्री महावीर जिन पूजा 58
• अर्घावली 65
• शान्ति पाठ 71
• विसर्जन पाठ 72
• निर्वाणकाण्ड भाषा 73
• श्री महावीर चालीसा 75

दीपावली को संध्याकाल में की जाने वाली आराधना, क्रिया-विधि 77

• श्री नवदेवता स्तोत्र—मंगलाष्टक 79
• घर पर की जाने वाली केवलज्ञान लक्ष्मी पूजा विधि 81
• मंगल कलश स्थापना, दीप प्रज्ज्वलन, धूप घट स्थापना, शास्त्र स्थापन मंत्र 82
• विनय पाठ 83
• पूजा पीठिका, देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ 84

- विद्यमान बीस तीर्थंकर अर्घ, समुच्चय चौबीसी अर्घ, भगवान महावीर स्वामी अर्घ 85
- श्री गौतम गणधर पूजा 86
- सरस्वती पूजा 91
- चौंसठ ऋद्धि अर्घ 94
- गणधर वलय स्तोत्र (संस्कृत) 97
- गणधर वलय स्तोत्र (हिन्दी) 98
- गणधर चालीसा 101
- श्री महावीर स्वामी (आरती) 103
- पंच परमेष्ठी आरती 104
- जिनवाणी स्तुति 105

जैन श्रावक और दीपावली पर्व

भारत एक विशाल देश है, जिसमें अलग-अलग धर्मों के अनुयायी अपने-अपने धर्मानुसार धर्मपालन के लिये पूर्णतः स्वतंत्र हैं। सभी धर्मानुयायी अपने पर्व, त्यौहार, उत्सव मनाकर भारतीय संस्कृति के साथ धर्म संस्कृति को समृद्ध बनाते हैं। सभी धर्मों में जैनधर्म का सर्वोपरि स्थान है, क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्त विश्व कल्याणकारी, आचरण प्रधान, मैत्रीभाव को स्थापित करने वाले, प्राणीमात्र की रक्षा के हिमायती, और सभ्य जीवनशैली को विकसित करनेवाले हैं। चूँकि जैनधर्म अनादि-अनिधन धर्म है, अतः जैनधर्म के सिद्धान्त भी अनादि-अनिधन हैं। इन सिद्धान्तों की व्याख्या एवं प्रवर्तन करनेवाले जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकर माने गये हैं। इनमें प्रथम तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी हैं।

वर्तमान शासन नायक अंतिम तीर्थेश भगवान् महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को वैशाली गणराज्य की कुण्डलपुर नगरी में हुआ। इनके पिता का नाम श्री सिद्धार्थ एवं माता का नाम श्रीमती त्रिशला था। इनकी व्यक्तिगत

विशेषताओं से वीर, अतिवीर, महावीर, सन्मति, और वर्द्धमान, इन पाँच नामों से समुचे भूमण्डल पर ख्याति फैली। भगवान् महावीर ने बालब्रह्मचारी के रूप में जीवन जीने का दृढ़ निश्चय किया, और तीस वर्ष की आयु में वैराग्य पथ पर कदम रखते हुये जैनमुनि की दीक्षा अंगीकार कर ली। जैनधर्म की कठोर साधना का पालन करते हुये मात्र 42 वर्ष की आयु में केवलज्ञान की प्राप्ति करली। आपको केवलज्ञान की प्राप्ति जान सौधर्म इन्द्र ने अत्यन्त भाव-विभोर होकर नमन करके समवशरण की रचना का आदेश कुबेर को दिया। छ्यासठ दिन विरह के बाद श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन आपकी दिव्यध्वनि खिरना प्रारंभ हुई। इसलिये इस दिन को वीरशासन जयन्ती के रूप में समस्त जैनधर्मानुयायी मनाते हैं।

भगवान् महावीर स्वामी के समवसरण में उनके अनेकानेक शिष्यों में प्रधान ग्यारह शिष्य गणधर पद को प्राप्त हुये। जो क्रमशः इन्द्रभूति गौतम, अग्निभूति गौतम, वायुभूति गौतम, शुचिदत्त, सुधर्म, माण्डव्य, मौर्यपुत्र, अकम्पन, अचल, मेदार्य, और प्रभास, इन नाम वाले थे। इन गणधरों की आयु क्रमशः 92 वर्ष, 24 वर्ष, 70 वर्ष, 80 वर्ष, 100 वर्ष, 83 वर्ष, 95 वर्ष, 78 वर्ष, 72 वर्ष, 60 वर्ष और 40 वर्ष थी।

भगवान् महावीर और धर्म परम्परा–

भगवान् महावीर ने जैनधर्म के पंचशील सिद्धान्तों की सम्यक् व्याख्या करके प्राणीमात्र को आत्महित का मार्ग बताया। उन्होंने धर्म के मार्ग पर चलने वाले भव्य जीवों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया। प्रथम श्रमण के रूप में और द्वितीय श्रावक के रूप में। जो पंचशील सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से पालन करनेवाले हैं उन्हें श्रमण कहते हैं तथा जो पंचशील सिद्धान्तों का एकदेश पालन करनेवाले अथवा भावना रखनेवाले हैं उन्हें श्रावक कहते हैं। इस प्रकार जो श्रद्धावान, विवेकवान और क्रियावान हैं उसे श्रावक कहा है। दान और पूजा श्रावक का मुख्य धर्म स्थापित करते हुये भगवान् महावीर ने पापों से बचने का समीचीन मार्ग दिखाकर परम्परा से मुक्ति की युक्ति श्रावकों को समझाई।

भगवान् महावीर के समवशरण में मुख्य श्रोता के रूप में श्रेणिक ने साठ हजार प्रश्नों के द्वारा चार अनुयोगों का स्वरूप जाना। आज वर्तमान में भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित धर्म का पालन श्रावक और श्रमण परम्परा के रूप में देखने को मिल रहा है।

भगवान् महावीर की शिक्षायें एवं निर्वाणोत्सव–

भगवान् महावीर ने सर्वोदयी शिक्षा का महत्वपूर्ण उपदेश देकर सम्यक् जीवन जीने की कला सिखाई। उन्होंने 'जियो और जीने दो' का सूत्र प्राणीमात्र के कल्याण के लिये एवं सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक पारिवारिक जीवन के लिये भी महत्वपूर्ण बताया। भगवान् महावीर ने अहिंसा के आधार पर जीवन शैली विकसित करने का समीचीन उपदेश दिया तथा सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पालन करने की शिक्षा देते हुये प्रत्येक मानव को जीवन जीने का तरीका बताया। भगवान् महावीर ने शुद्ध चैतन्य आत्मतत्व के आधार पर ऊँच-नीच के व्यवहार को नकार दिया। सम्पूर्ण नारी जाति को मोक्ष प्राप्ति के लिये दीक्षा का मार्ग प्रशस्त करके मोक्षमार्ग की साधना का रास्ता दिखाया। भगवान् महावीर की शिक्षायें न केवल मनुष्यों के लिये थीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के साथ तिर्यंच पशुओं के लिये भी कल्याणकारी थीं। इसीलिये जन्मजात बैरी पशु भी अपने बैरभाव को भूलकर प्रेम से रहने लगे।

भगवान् महावीर स्वामी तीस वर्षों तक जैनधर्म के सर्वोदयी सिद्धान्तों की व्याख्या समवसरण सभा में मनुष्य, देव और तिर्यंचों के मध्य करते रहे। उन्होंने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता को मोक्षमार्ग निरूपित किया, तथा जैनधर्म के सात तत्वों पर श्रद्धा करने की प्रेरणा दी। भगवान् महावीर ने यह जगत् ईश्वरीय सत्ता से संचालित न होकर सहज संचालित होना बताया, और कर्म सम्बद्ध चेतना संसार में अनेक प्रकार लीलायें करता हुआ जब मोक्षमार्ग को साधकर कर्म से रहित होता है, तब मोक्ष होता है, ऐसा कहा।

भगवान् महावीर ने अनादि-अनिधन जैनधर्म के सिद्धान्तों का स्वयं

पालन करते हुये समीचीन मोक्षमार्ग की साधना की। उन्होंने सम्पूर्ण साधकों के लिये व्यवहार-निश्चय मोक्षमार्ग को साधने का मूलमंत्र दिया। उन्होंने बताया, जब तक व्यवहार मोक्षमार्ग की प्राप्ति नहीं होती, तब तक निश्चय मोक्षमार्ग को प्राप्त नहीं किया जा सकता, अत: व्यवहार मोक्षमार्ग साधन है, और निश्चय मोक्षमार्ग साध्य है। उन्होंने इस मार्ग की प्रामाणिकता दिखाने के लिये स्वयं इस मार्ग की साधना की और मार्गफल को प्राप्त करके दिखाया। केवलज्ञानी भगवान् महावीर ने सम्पूर्ण जगत को मोक्ष मंजिल के समीचीन मार्ग से परिचित कराके अज्ञान अंधकार को दूर किया। और सम्पूर्ण जगत में व्याप्त अनेकों पाखण्डी मोक्षमार्गों का खण्डन करके उन्हें समीचीन दिशाबोध दिया।

वर्तमान शासन नायक अंतिम तीर्थेश भगवान् महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी के दिन योग निरोध की प्रक्रिया प्रारंभ की, जिससे समवशरण में खिरने वाली दिव्यध्वनि का अभाव हो गया। गणधर इन्द्रभूति ने इस बात की घोषणा कर दी कि अब भगवान् महावीर स्वामी निर्वाण प्राप्ति की साधना में संलग्न हो गये हैं, अत: उन्होंने हमें आत्महितकारी जो उपदेश दिये हैं, उनका हम पालन करें। भगवान् महावीर स्वामी ने सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाती शुक्लध्यान के लिये सर्वप्रथम बादर काययोग में स्थित होकर बादर वचनयोग और बादर मनोयोग का निरोध किया, फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर श्वासोच्छ्वास का निरोध किया। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर काययोग से उसी बादरकाययोग का निरोध किया। तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त से सूक्ष्म काययोग से सूक्ष्म मनोयोग का, फिर सूक्ष्म काययोग से सूक्ष्म वचनयोग का, फिर सूक्ष्म काययोग से सूक्ष्म श्वासोच्छ्वास का, निरोध किया।

इस प्रकार सूक्ष्म काययोग में स्थित होकर सूक्ष्म क्रियाप्रतिपाती ध्यान किया और सूक्ष्म काययोग से सूक्ष्म काययोग का निरोध करके अन्तर्मुहूर्त में शैलेषी अवस्था को प्राप्तकर आस्रव-बंध का पूर्ण अभाव किया फिर अयोग केवली होकर चौदहवें गुणस्थान के उपान्त्य अर्थात् अन्त समय के पहले समय में बहत्तर कर्म प्रकृतियों का नाश किया, पश्चात् चौदहवें गुणस्थान के ही उपान्त्य

समय में समुच्छिन्न क्रिया निवृत्ति नामक चतुर्थ शुक्लध्यान प्रगट करके अन्त समय में शेष रही तेरह प्रकृतियों का नाश करके सर्वकर्मों से विमुक्त होकर एक समय में परम निर्वाण को प्राप्त किया।

इस प्रकार अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी समस्त भव्यों को संबोधकर पावानगरी के मनोहरोद्यान में योगनिरोध पूर्वक स्थित हुये थे। जब चतुर्थकाल में तीनवर्ष साढ़े आठ मास शेष थे, तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रत्यूष प्रातः बेला में ही निर्वाण को प्राप्त हुये।

भगवान् महावीर और दीपावली पर्व—

भगवान् महावीर के शासन में रहनेवाले सभी जैनधर्मानुयायी, दीपमालिका (दीपावली) पर्व को बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। यह दीपावली पर्व कब से प्रारम्भ हुआ ? इस प्रश्न का उत्तर श्री हरिवंश पुराण में इस प्रकार प्राप्त होता है—

स पञ्चकल्याण महामहेश्वरः प्रसिद्ध निर्वाणमहे चतुर्विधैः।
शरीर पूजा विधिना विधानतः सुरैः समभ्यर्च्यंत सिद्धशासनः।।

ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया सुरासुरैः दीपितया प्रदीप्तया।
तदा स्म पावानगरी समन्ततः प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते।।

तथैव च श्रेणिक पूर्व भूभुजः प्रकृत्य कल्याणमहं सहप्रजाः।
प्रजग्मुरिन्द्राश्च सुरैर्यथायथं प्रयाचमाना जिनबोधिमर्थिनः।।

ततस्तु लोकः प्रतिवर्ष-मादरात्प्रसिद्ध दीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्र निर्वाण विभूति भक्तिभाक्।।

अर्थात् गर्भादि पाँचों कल्याणकों के महान अधिपति, सिद्धशासन भगवान् महावीर के निर्वाण महोत्सव के समय चारों निकाय के देवों ने विधिपूर्वक उनके शरीर की पूजा की। उस समय सुर और असुरों के द्वारा जलायी हुई बहुत भारी देदीप्यमान दीपों की पंक्ति से पावानगरी का आकाश सब ओर से जगमगा उठा। श्रेणिक आदि राजाओं ने भी प्रजा के साथ मिलकर भगवान् के निर्वाण कल्याणक

की पूजा की। तदनन्तर बड़ी उत्सुकता के साथ जिनेन्द्र भगवान् के रत्नत्रय की याचना करते हुये इन्द्र देवों के साथ-साथ यथास्थान चले गये। उस समय से लेकर भगवान् के निर्वाण कल्याणक की भक्ति से युक्त संसार के प्राणी इस भरतक्षेत्र में प्रतिवर्ष आदरपूर्वक प्रसिद्ध दीपमालिका के द्वारा भगवान् महावीर की पूजा करने के लिये उद्यत् रहने लगे अर्थात् भगवान् महावीर के निर्वाण कल्याणक की स्मृति में दीपावली का उत्सव मनाने लगे।

श्री हरिवंश पुराण जी के उपर्युक्त प्रमाण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जैनधर्मानुयायी भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव की स्मृति स्वरूप दीपावली पर्व को मनाते हैं, न कि गौतमस्वामी के केवलज्ञान की प्राप्ति की स्मृति स्वरूप।

'जन-जन के महावीर' पुस्तक में भी **'दीपावली की शुरूआत का इतिहास'** शीर्षक से निम्न प्रकार प्रमाणित किया गया है—

ईस्वी सन् से 527 वर्ष, विक्रम संवत् से 470 वर्ष, शकसंवत् से 305 वर्ष 5 माह पूर्व कार्तिक वदी चौदस सोमवार और अमावस्या मंगलवार के मध्य में प्रात:काल जब चौथेकाल के समाप्त होने में 3 वर्ष साढ़े आठ माह शेष रह गये थे और केवलज्ञान की प्राप्ति होने से 29 वर्ष 5 माह 20 दिन बाद, 71 वर्ष 3 माह 25 दिन की आयु में भगवान महावीर ने मल्लों की पावापुर नगरी के पद्म सरोवर के मध्य खड्गासन मुद्रा में निर्वाण को प्राप्त किया। कुछ ही समय के अन्दर देवताओं ने उस अंधेरी रात्रि में रत्न वर्षाकर रोशनी की, जनता ने दीपक जलाकर उत्सव मनाया। राजाओं ने वीर निर्वाण की यादगार में कार्तिक अमावस्या की रात्रि को 'प्रतिवर्ष दीपावली पर्व' की स्थापना की।

तब से आज तक सभी वर्गों के लोग उत्साहपूर्वक दीपावली का त्यौहार मनाते चले आ रहे हैं। इसी बात को प्रो. पृथ्वीराज ने अपने शब्दों में लिखा है—

That night in which Lord Mahavira attained Niruvan, was lighted up by descending and ascending Gods and 18 confederate Kings instituted an illumination to celebrate Moksha of the Lord.

Since then the people make illumination and this, in fact, is the "ORIGIN OF DIPAWALI".

Prof. Prthviraj. VOA Vol. I Part VC P.9.

इस प्रकार कार्तिक अमावस्या की प्रात: बेला में भगवान् महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुयी, तथा संध्या बेला में गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। यही कारण है कि सभी जैनधर्मानुयायी भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव की खुशी में दीपावली पर्व तथा गौतम स्वामी को केवलज्ञान लक्ष्मी की प्राप्ति होने से सायंकाल ज्ञान लक्ष्मी की पूजा करते हैं—

दीपावली पर्व का वर्तमान स्वरूप—

दीपावली सम्पूर्ण भारतदेश में मनाया जानेवाला एक सर्वमान्य पर्व है। दीपावली का नाम सुनते ही बच्चे युवा वृद्ध सभी के हृदय में एक विशिष्ट अनुभूति होने लगती है। वर्तमान में दीपावली पर्व का पावन उद्‌देश्य समाप्त होता जा रहा है। दीपावली पर्व जहाँ धर्म और अध्यात्म का संदेशवाहक था, वहीं अब मनोरंजन, प्रदर्शन, एवं धनोपासना का पर्व बन गया है। मानव की स्वार्थवृत्ति के चलते दीपावली पर्व का अपना मौलिक स्वरूप बदलता जा रहा है। सचमुच आज दीपावली पर्व बाजारू संस्कृति का हिस्सा बन गया है। अहिंसामूलक यह पवित्र पर्व हिंसामूलक बारूद और पटाखों के चलन से गगनभेदी धूम-धड़ाम की आवाज में गुम होता जा रहा है। बाजारू मिठाइयों के स्वाद में इस पावन पर्व का असली स्वाद जो निज शुद्ध चिदानन्द की अनुभूति है, प्राय: खो चुका है। बाजार में बिकने वाले रंग बिरंगे ग्रीटिंग कार्ड दीपावली पर्व के प्रदर्शन को बढ़ावा दे रहे हैं। आज जितना कीमती ग्रीटिंग कार्ड होता है, दीपावली पर्व उतना ही कीमती माना जा रहा है। भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के आत्मगुणों की पूजा-आराधना से पुण्य

का प्रधान कारणभूत यह पर्व पापोत्पत्ति के कारणभूत धनोपासना के रूप में फल-फूल रहा है।

जिन कार्यों का दीपावली पर्व से कोई वास्ता नहीं है, उन कार्यों को दीपावली पर्व से जोड़कर हम अपना आत्म पतन कर रहे हैं। अतः प्रत्येक जैन धर्मानुयायी को चाहिये कि हम जैन संस्कृति के अनुसार दीपावली पर्व को मनायें, जिससे दीपावली पर्व की मूल अवधारणायें प्रदूषित न होकर सुरक्षित रह सकें।

दीपावली पर्व का जिन कार्यों से कोई वास्ता नहीं है और हम कर रहे हैं, वे निम्न बिन्दुओं से जाने जा सकते हैं—

- दीपावली पर्व पर पटाखे चलाना।
- दीपावली पर्व पर नये बही-खाते प्रारम्भ करने के लिये बही की पूजा करना।
- दीपावली पर्व पर सिक्कों की थैली पूजना।
- दीपावली पर्व पर रात्रि में पूजन करना।
- दीपावली पर्व पर घर-मकान-दुकान की सफाई इसलिये करना जिससे लक्ष्मी का आगमन हो।
- दीपावली पर्व पर बाजार की अशुद्ध मिठाइयों का सेवन अनिवार्य मानना।
- दीपावली पर्व पर रात्रि जागरण इसलिये करना, जिससे द्वार पर आई लक्ष्मी लौटकर न जा सके।
- दीपावली पर्व पर वीतरागी सच्चे देव के अलावा अन्य सरागी देवों की उपासना अनिवार्य मानना।
- दीपावली पर्व पर परिवार के सदस्यों का अनिवार्य रूप से जुआ खेलना।
- दीपावली पर्व पर नये वस्त्र पहनने से पर्व की सफलता मानना।
- दीपावली पर्व पर आभूषण एवं बर्तन आदि खरीदना अनिवार्य और शुभ मानना।

- दीपावली पर्व पर रागवर्द्धक सांस्कृतिक आयोजन करना।
- दीपावली पर्व पर वाहन आदि की पूजा करना, कराना और अनुमोदना करना।

इस तरह उपर्युक्त कार्य जैनधर्मानुयायी श्रावक को दीपावली पर्व से जोड़ते हुये कभी नहीं करना चाहिये, क्योंकि यह कार्य मिथ्यात्व, अज्ञान, और हिंसा का कारण होने से अहितकारी तथा जैन संस्कृति के विपरीत हैं।

पुनः दीपावली पर्व पर जैनधर्मानुयायी श्रावक को जैन संस्कृति के अनुकूल जो कार्य करने योग्य हैं वो निम्न प्रकार हैं—

- साधर्मीजनों में वात्सल्य एवं दीन-दुखी जीवों पर करुणाभाव रखना।
- भगवान् महावीर स्वामी का जीवन चरित्र पढ़ना।
- भगवान् महावीर स्वामी की प्रमुख शिक्षाओं का स्मरण कर उन पर चलने का संकल्प करना।
- भगवान् महावीर स्वामी के पंचशील सिद्धातों का पालन करना।
- भगवान् महावीर स्वामी और जैनधर्म की शिक्षाओं और सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिये कार्य करना।
- भगवान् महावीर का गुणानुवाद करना।
- दीपावली पर्व पर गरीब दुःखी जनों की सहायता करना।
- दीपावली पर्व पर संयम का पालन करना।
- दीपावली पर्व पर यथायोग्य रात्रि जागरण करते हुये मंगल की कामना से भजन-कीर्तन का आयोजन करना।
- दीपावली पर्व पर दीपमालिका का आयोजन कर पारस्परिक प्रेम-व्यवहार को बढ़ाना एवं बैर-विरोध को मिटाना।
- दीपावली पर्व पर भगवान् महावीर स्वामी की पूजन आराधना करके आत्महितकारी चिन्तन करना।

इस प्रकार दीपावली पर्व की गरिमा और गौरव बनाकर रखना प्रत्येक जैनी श्रावक का कर्त्तव्य है। दीपावली पर्व स्वर्ग के देवों और धरती के मनुष्यों द्वारा जिस खुशी को लेकर मनाया गया, हम उस पवित्र भावना को इस पावन पर्व पर साकार करने की कोशिश करें। किन्तु इस पावन पर्व पर होने वाली रूढ़िवादिता और मूढ़ता को पोषित न करें।

प्रश्न- भगवान् महावीर निर्वाणोत्सव किस दिन मनाना चाहिये?

उत्तर- अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के अन्तिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र रहते हुये अमावस्या के प्रातःकाल में हुआ। ज्योतिष की गणनानुसार स्वाति नक्षत्र चतुर्दशी की रात्रि में आता है। यह नक्षत्र उदय में अमावस्या को और अस्तोपरान्त चतुर्दशी को नियमतः आरम्भ हो जाता है। भगवान् का निर्वाणोत्सव दो चतुर्दशियों के होने पर जो चतुर्दशी उदयकाल में पाँच घटी प्रमाण से कम होगी उसके प्रातः अर्थात् पूर्व चतुर्दशी की रात्रि के अवसान में और द्वितीय चतुर्दशी जो कि वस्तुतः अमावस्या है उसके प्रातःकाल में मनाया जायेगा। यहाँ सबसे बड़ी नियामक बात स्वाति नक्षत्र की है। जिस दिन स्वाति का योग चतुर्दशी के अवसान में प्राप्त हो उसी दिन निर्वाणोत्सव सम्पन्न करना चाहिये। अमावस्या के उदय में तो स्वाति आता है, पर रात तक नहीं रहता, अतएव चतुर्दशी के समाप्ति काल में स्वाति नक्षत्र के रहने पर यह उत्सव सम्पन्न किया जाता है। अतः यहाँ तिथि का नियामक नक्षत्र को मानना चाहिये।

प्रश्न- वीर निर्वाणोत्सव पर प्रातःकाल क्या करना चाहिये ?

उत्तर- वीर निर्वाण दीपोत्सव पर्व पर जैनधर्मानुयायी श्रावक को सर्वप्रथम प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में 4.00 बजे शैया त्याग देना चाहिये। और निम्नांकित चर्या का पालन करना चाहिये।

☐ सर्वप्रथम जागते ही मन ही मन में नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

☐ नौ बार णमोकार मंत्र जपने के बाद यथायोग्य शरीर की शुद्धि करें।

□ शरीर की शुद्धि पश्चात् कम से कम दो घड़ी अथवा इतना अभ्यास न हो तो कम से कम पाँच मिनिट सामायिक करें अथवा प्रार्थना करें।

सामायिक अथवा प्रार्थना के लिये निम्न विधि का प्रयोग करें।

✱ चारों दिशाओं में खड़े होकर कायोत्सर्ग करके चतुर्दिक् नवदेवता की वन्दना करना चाहिये। जो इस प्रकार है –

- सर्वप्रथम पूर्व दिशा में कायोत्सर्ग उपरान्त बोलना चाहिये ''पूर्व दिशा-विदिशा में स्थित अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिनचैत्यालय के लिये मेरा बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।''

- फिर दक्षिण दिशा में कायोत्सर्ग उपरान्त बोलना चाहिये ''दक्षिण दिशा-विदिशा में स्थित अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय के लिये मेरा बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।''

- फिर पश्चिम दिशा में कायोत्सर्ग उपरान्त बोलना चाहिये ''पश्चिम दिशा-विदिशा में स्थित अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय के लिये मेरा बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।''

- फिर उत्तर दिशा में कायोत्सर्ग उपरान्त बोलना चाहिये ''उत्तर दिशा -विदिशा में स्थित अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, जिन चैत्यालय के लिये मेरा बारम्बार नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो।''

- चतुर्दिक् वन्दना के उपरान्त नाभि से उठने वाले तीन बार ''ॐ'' का गहरा उच्चारण करें। इसके बाद तीन बार ''ॐ नमः सिद्धेभ्यः'' बोलें।

- इसके बाद एक बार णमोकार मंत्र, चत्तारिमंगल, चत्तारि उत्तम और चत्तारि शरण का उच्चारण करें।
- तीन बार 'जय महावीर, जय महावीर, जय महावीर' बोलकर आत्मचिंतन करें।
- सामायिक अथवा पाँच मिनट प्रार्थना करने के बाद परिवारजनों से जय-जिनेन्द्र करें, फिर सामूहिक अथवा अकेले सुप्रभात स्तोत्र, एवं महावीराष्टक स्तोत्र का पाठ करें। पाठ संस्कृत अथवा हिन्दी में सुविधानुसार करें।
- स्तोत्र पाठ करने के बाद अपने से बड़े माता-पिता के पैर छुयें। एवं जय-जिनेन्द्र बोलकर स्नानादि के लिये जायें।
- शुद्ध वस्त्र पहनकर 'संसार दुःखमय है, मोक्ष सुखमय है' ऐसा चिन्तन करते हुये, निर्वाण प्राप्ति की भावना से अष्टद्रव्य लेकर मंदिर जी में भाव-द्रव्यपूजा करें। सर्वप्रथम देव-शास्त्र-गुरू की पूजा फिर भगवान महावीर स्वामी की पूजा करते हुये ज्ञान कल्याणक का अर्घ चढ़ाने के उपरान्त निर्वाणकाण्ड पढ़ते हुये निर्वाणकल्याणक का अर्घ और निर्वाण लाडू चढ़ायें तथा पाँच दीपक प्रज्ज्वलित करें। फिर जयमाला उसके बाद शान्तिपाठ विसर्जन करें।
- यथायोग्य समय से स्वाध्याय तथा यदि साधु समागम है, तो गुरु उपासना आहारदान आदि करके शुद्ध भोजन करें।

इस तरह मन वचन काय शुद्ध करके वीर निर्वाणोत्सव भक्ति से मनाते हुये भगवान् महावीर स्वामी की सुबह पूजा अर्चा करें एवं दीपावली पर्व मनायें।

शासन नायक भगवान् महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति कार्तिक

कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल हुई। इसी दिन अपरान्ह गौधूली बेला में प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। इन्द्र देवों ने आकर केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजा की। अतः जैनधर्मानुयायी श्रावक को गौधूली बेला में केवलज्ञान लक्ष्मी एवं गौतम केवली की पूजा करना चाहिये।

प्रश्न- पूजा मंदिर जी में करना चाहिये या घर पर ?

उत्तर- जब भगवान् गौतम स्वामी के लिये केवलज्ञान लक्ष्मी की प्राप्ति हुई, तब सुर, नर, उरग इन्द्रादि देवों ने भगवान् के निकट आकर केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजाकर महा उत्सव मनाया था, अतः जिस प्रकार भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव की पूजा-आराधना मंदिर में आकर करते हैं, इसी प्रकार सभी जैनधर्मानुयायी श्रावकों को जिनमंदिर आकर ही भगवान् गौतम स्वामी एवं केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजा करना चाहिये।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि पूजन योग्य सामग्री गौधूली बेला के पूर्व ही तैयार कर लेना चाहिये, और समय पर पूजन पूर्ण कर लेना चाहिये। अर्थात् पूजन में रात्रि न हो, इसका ध्यान रखना चाहिये।

प्रश्न- क्या पूजन रात्रि में नहीं करना चाहिये ?

उत्तर- हाँ, दीपावली पर्व पर पूजन रात्रि में नहीं करना चाहिये। क्योंकि रात्रि में पूजन करने से अनेक दोष होते हैं। मूलतः अहिंसा धर्म का पालन ठीक से नहीं होता।

प्रश्न- क्या दिन में पूजन करने से हिंसा नहीं होती ?

उत्तर- पूजा करना यद्यपि सावद्य है, तो भी शुभोपयोग की कारणभूत पूजा में अल्प सावद्य तथा प्रचुर पुण्य प्राप्ति ग्राह्य है। किन्तु प्रचुर सावद्य तथा अल्प पुण्य ग्राह्य नहीं है। जो जीव दिन में सूर्य के प्रकाश में दिखाई नहीं देते वे सूर्यास्त के बाद

प्रचुर मात्रा में दिखाई देने लगते हैं, अतः रात्रि पूजन में अहिंसा धर्म का पालन ठीक से नहीं होता, इसलिये पूजा दिन में ही करना चाहिये।

प्रश्न– पूजा करना आप शुभोपयोग मानते हैं, अतः रात्रि में पूजा का निषेध करने से शुभोपयोग का निषेध माना जायेगा, क्या यह उचित है?

उत्तर– पूजा शुभोपयोग में कारण है, और रात्रि में पूजन करने से शुभोपयोग होता है, ऐसा मानकर गृहस्थ श्रावकों को अपना विवेक नहीं खोना चाहिये। हमने यहाँ रात्रिपूजन का निषेध करके शुभोपयोग का निषेध नहीं किया, अपितु रात्रिपूजन में होने वाली हिंसा का निषेध किया है। अतः जिसमें द्रव्यहिंसा का परिहार हो, ऐसे शुभोपयोग के कारणभूत पंचपरमेष्ठी का ध्यान, सामायिक, अनुप्रेक्षाओं का चिन्तन, स्वाध्याय, मंत्र जाप, स्तोत्रादि पाठ, प्रभु गुणस्तवन आदि करना चाहिये। शुभोपयोग के कारणभूत जो कार्य जब करने योग्य हों, तभी करना उचित है, अतः रात्रि पूजन का निषेध करने से शुभोपयोग का निषेध नहीं मानना चाहिये।

प्रश्न– यदि किन्हीं तीर्थंकरों के केवलज्ञान या निर्वाण कल्याणक रात्रि में हों, तो क्या इन्द्रादि देव रात्रि में पूजन नहीं करते हैं ? क्या वे सुबह होने का इंतजार करते हैं ?

उत्तर– इन्द्रादि देव कल्याणकों की पूजा–उत्सव तुरन्त आकर मनाते हैं, इंतजार नहीं करते हैं, किन्तु उनकी पूजा द्रव्य सावद्य से रहित होती है अतः इन्द्रादि देवों के साथ, अपनी संगति, तर्कपूर्ण युक्ति योग्य नहीं है, क्योंकि गृहस्थ श्रावक तो रात्रि क्या दिन में भी अल्प सावद्य रहित द्रव्य पूजा नहीं कर सकता, अतः हमें विवेक पूर्वक दिन में ही पूजा करना चाहिये।

प्रश्न– उपरोक्त विधि से पूजन मंदिर में करने की बात तो समझ आ गई, किन्तु वर्तमान में पूजन घर पर करने की परम्परा है, अतः इस विषय में क्या करना चाहिये ?

उत्तर– यह सच है कि वर्तमान में घर पर पूजा करने की परम्परा चल रही है। हो सकता है, पहले गृह चैत्यालय हुआ करते थे, अतः श्रावक अपने गृह चैत्यालय में जाकर पूजा करता हो, और वर्तमान में गृहचैत्यालय अब यत्र–तत्र ही देखे जाते हैं, इस कारण घर पर पूजा करने की परम्परा मानी जा सकती है। इसके अलावा घर पर पूजा करने की परम्परा कब, क्यों और कैसे प्रारंभ हुई, इस विषय में कोई ठोस प्रमाणित बात सुनने में नहीं आती, इस विषय में यह हमारा चिंतन है, सुधीजन और विचार करें।

प्रश्न– **केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजन घर पर किस प्रकार करना चाहिये ?**

उत्तर– सच तो यह है कि केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजन घर पर करनेवाली परम्परा में धीरे–धीरे विवेक पूर्वक बदलाव लाना चाहिये, और जिनमंदिर में जाकर पूजन विधि को सम्पन्न करना चाहिये। फिर भी वर्तमान परम्परानुसार जो घर पर पूजा करने का चलन है, उसे विवेक पूर्वक ही सम्पन्न करना चाहिये।

घर पर केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजा विधि–

अपरान्ह काल गोधूली बेला में (सायं 4 से 6 बजे तक) वर्तमान प्रचलन के अनुसार जैनधर्मानुयायी श्रावक को घर पर केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजा, विधि पूर्वक करना चाहिये। पूजन के लिये शुद्ध प्रासुक द्रव्य का प्रयोग करना चाहिये।

सामग्री–शुद्ध प्रासुक अष्ट द्रव्य की थाली, दीपक, धूपदान, मंगल द्रव्य युक्त मंगल कलश, पीली सरसों, श्री फल, थाली, शास्त्र चौकी, चारों अनुयोगों के चार शास्त्र (जिनवाणी), पूजन चौकी, पाटे एवं अन्य पूजन सामग्री ।

विधि– अपरान्ह गोधूली बेला में घर के ईशान कोण अथवा घर के मुख्य कमरे में पूर्व या उत्तर की दीवार पर सुविधानुसार ''श्री, श्री'' वाला माण्डना अथवा सुराती बनाना चाहिये। फिर एक पाटे या चौकी पर चावल से स्वास्तिक बनाकर स्मृति स्वरूप भगवान् महावीर स्वामी का फोटो रखना चाहिये। हम जैन धर्मानुयायी

हैं, जिसे जिनमत का अंतरंग में अत्यन्त गौरव प्रकट हो रहा है, ऐसे सच्चे धर्मी श्रावक को स्मृति स्वरूप भगवान् महावीर एवं गौतम स्वामी की तस्वीर के अलावा अन्य सरागी देवी–देवता लक्ष्मी, गणेशजी आदि के चित्र कभी नहीं रखना चाहिये, क्योंकि जैनदर्शन में इनका उल्लेख नहीं है।

प्रश्न– जब अन्यमती लक्ष्मी, गणेशजी की तस्वीर रखते हैं, तो अपने लोग क्यों नहीं रख सकते ?

उत्तर– अन्यमती अपनी मान्यतानुसार देवी–देवताओं की तस्वीर रखते है, उनकी मान्यता भगवान् महावीर स्वामी या गौतम स्वामी की नहीं हैं, अतः इनकी तस्वीर नहीं रखते। जैनियों की मान्यता भगवान् महावीर और गौतम स्वामी की है, अतः जैनियों को अपनी मान्यता का पालन करना चाहिये। इसमें किसी से राग–द्वेष नहीं करना चाहिये। पर्व पवित्रता के लिये हैं, राग द्वेष करने के लिये नहीं हैं।

प्रश्न– दीपावली के दिन लक्ष्मी जी एवं गणेशजी की पूजा का प्रचलन किस प्रकार प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर– जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकर माने गये हैं। अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई, तभी से दीपावली पर्व की शुरूआत हुई। इसी दिन संध्या बेला में गणेश गौतम स्वामी को घातिया कर्मों के अभाव से अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य रूप अंतरंग लक्ष्मी यानि केवलज्ञानादि लक्ष्मी की प्राप्ति हुई, जिससे जैन धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष दीपावली के दिन केवलज्ञान लक्ष्मी और गणेश इन्द्रभूति गौतम की आराधना पूजा करने लगे।

अन्य मतावलम्बियों में भी दीपावली की मान्यता के पृथक्–पृथक् कारण हैं जैसे भगवान श्रीराम इस दिन अयोध्या वापिस आये, हरगोविन्द सिंह जेल से छूटकर आये, स्वामी दयानन्द ने देह त्यागी, स्वामी रामतीर्थ का जन्म हुआ, कृष्ण ने नरकासुर का वध किया, दुर्गा पतिगृह गईं।

यहाँ विचारणीय बात यह है कि यदि भगवान् राम अयोध्या वापिस आये, तो इस दिन भगवान राम की पूजा करना चाहिये, लक्ष्मी जी एवं गणेश जी की पूजा क्यों की जाती है? इसी प्रकार हरगोविन्द सिंह, स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, श्री कृष्ण, आदि प्रसंगों से इस दिन इनकी पूजा अर्चना करना तो माना जा सकता है लेकिन लक्ष्मीजी एवं गणेश जी की इस दिन पूजा करना समझ से परे है।

वास्तविकता तो यह है, कि जैन धर्मावलम्बी ही दीपावली के दिन भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के साथ गौतम गणेश को केवलज्ञानादि लक्ष्मी की प्राप्ति होने से गणेश गौतम स्वामी, एवं केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजा करते आ रहे थे। जब यह बात अन्य धर्मावलम्बियों को पता चली कि जैनी लोग दीपावली के दिन लक्ष्मीजी एवं गणेशजी की पूजा आराधना करते हैं, इसीलिये जैनियों के पास धन लक्ष्मी की कमी नहीं रहती, तो अन्य मतावलम्बियों ने भी अपने-अपने मान्य देवी-देवता लक्ष्मी एवं गणेश जी की इसी दिन आराधना-पूजा करना आवश्यक बताया। धीरे-धीरे इस दीपावली के दिन सभी लोगों में लक्ष्मी एवं गणेशजी की पूजा करने का प्रचलन हो गया।

प्रश्न- क्या भगवान श्री राम दीपावली के दिन वापिस लौटकर अयोध्या आये थे ?

उत्तर - वर्तमान में ऐसी लोक मान्यता है, कि भगवान् श्री राम दीपावली के दिन रावण का वध करके वापिस अयोध्या आये थे । परन्तु अनेक विद्वानों का मत है कि इसका कोई शास्त्रीय आधार नहीं है । किसी भी प्राचीन ग्रंथ यहाँ तक कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामायण' नामक ग्रन्थ में भी इसका उल्लेख नहीं है।

जबकि आचार्य चतुरसैन शास्त्री ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'वयम् रक्षामः' में शास्त्रीय आधारों से यह स्पष्ट किया है कि श्री राम की रावण पर विजय चैत्रमास में तथा उनका वापस अयोध्या में आगमन वैसाख मास में हुआ था । अतः यह विषय विद्वानों, विचारकों, शोधार्थियों द्वारा अन्वेषणीय शोध के योग्य है।

प्रश्न- जैनधर्म में गणेशजी का स्वरूप क्या है ?

उत्तर-जैनधर्म में तीर्थंकर की सभा में दिव्यध्वनि को झेलने वाले, एवं द्वादशांग वाणी को गूँथने वाले गणधर होते हैं। मुनिराजों के गण अर्थात् समूह को धारण करनेवाले होने से इन्हें गणधर कहते हैं। इसी प्रकार मुनिगणों के ईश अर्थात् स्वामी होने से इन्हें गणेश कहते हैं।

प्रश्न- किसी भी कार्य का प्रारम्भ करने के पहले गणेश जी का स्मरण करने का कारण क्या है ?

उत्तर- भगवान् महावीर स्वामी के समवसरण में जब गणेश इन्द्रभूति गौतम का आगमन हुआ, तभी भगवान् की दिव्यध्वनि खिरना प्रारम्भ हुई, अतः जैन श्रावकों ने किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने के पूर्व गणेश गौतम स्वामी का स्मरण करना आवश्यक मान लिया, इसीलिये भगवान् महावीर स्वामी के बाद सर्वप्रथम गौतम गणेश को ही स्मृत किया जाता है। जैसे-

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

प्रश्न- गणधर को गणेश कहने वाला कोई प्रमाण बताइये ?

उत्तर- गणधर को गणेश नाम से जैन शास्त्रों में अनेक जगह पुकारा गया है। विशेष रूप से 'गणधर वलय स्तोत्र' देखना चाहिये।

प्रश्न-दीपावली के दिन लक्ष्मी यंत्र, व्यापार लाभ यन्त्र, गृह क्लेश निवारण यंत्र, चक्रेश्वरी मंत्र, घंटाकर्ण मंत्र, रखना एवं जपना क्या आवश्यक होता है?

उत्तर- जैनियों में दीपावली का प्रयोजन महावीर निर्वाण, एवं गणेश गौतम स्वामी के लिये केवलज्ञान प्राप्ति मात्र है। अन्य यंत्र-मंत्र का चलन वीतराग धर्म

के विपरीत अज्ञानता के कारण हुआ है। अतः जैनियों को अपने पुण्यकर्म को बढ़ाने वाली सम्यक्त्ववर्धिनी क्रियायें ही करना चाहिये। पुण्यकर्म से लक्ष्मी आदि की प्राप्ति स्वयमेव होती है, अतः मिथ्यात्ववर्धक यंत्र-मंत्र का रखना-जपना जैनियों का कर्तव्य नहीं है। हमें इनसे दूर रहना चाहिये।

प्रश्न- दीपावली के दिन क्या नये बहीखाता की पूजन करना चाहिये ?

उत्तर-दीपावली के दिन नया बहीखाता बदल तो सकते हैं किन्तु बहीखाते की पूजन नहीं करना चाहिये। पूजन करना मात्र अज्ञानता है।

प्रश्न- दीपावली के दिन बहीखाता क्यों बदल सकते हैं ? और पूजन क्यों नहीं करना चाहिये ?

उत्तर- दीपावली के दिन भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाण की स्मृति में वीर निर्वाण संवत् का प्रचलन जैनियों में है। अतः दीपावली बाद वीर निर्वाण संवत् बदल जाने से बहीखाता बदलने की परम्परा भी देखी जाती है इसमें कोई दोष नहीं है। किन्तु दीपावली के दिन बहीखाता की पूजन करना मिथ्यात्व-अज्ञानता ही है। बहीखाता श्रावक के अर्थ पुरुषार्थ में निमित्त माना जाता है। दीपावली और अर्थ यानि धन आदि का कोई सम्बन्ध ही नहीं है। अतः बहीखाता की मात्र शुद्धि-संकल्प की क्रिया तो की जा सकती है किन्तु पूजन करना वास्तव में धर्म श्रद्धान से विचलित होना है।

प्रश्न- बहीखाता की 'शुद्धि-संकल्प' क्रिया किस प्रकार करना चाहिये ?

उत्तर- बहीखाता की 'शुद्धि-संकल्प' क्रिया निम्न प्रकार करना चाहिये ।

सर्वप्रथम बहीखाते पर अन्दर वाले पृष्ठ के ऊपर लिखें-

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

इसके बाद बही पर सुन्दर सा कपूर कुंकुम मिश्रित द्रव्य से स्वास्तिक बनायें।

श्री वीतरागाय नमः

जिनागम पंथ – जयवंत हो

श्री आदिनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री वृषभसेन गणधराय नमः **श्री गौतम गणधराय नमः**

श्री केवलज्ञानलक्ष्म्यैः नमः

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री लाभ **श्री शुभ**

श्री देवाधिदेव श्री महावीर निर्वाणात् .... वीराब्द्धे श्री तमे विक्रमाङ्के........... ईस्वीय संवत्सरे .... वासरे श्री जिनार्चनं विधाय अद्य कार्तिक कृष्णामावस्यायां लाभबेलायां नूतनवसना मुहूर्ते करिष्ये।

बहीखाते के प्रथम पृष्ठ पर इतना लिखने के बाद सर्वप्रथम जय–जयकार करें।

अरिहन्त केवली प्रणीत धर्म की – जय हो

शासन नायक भगवान् महावीर स्वामी की – जय हो

गणधर केवली गौतम स्वामी की – जय हो

चौबीस तीर्थंकर भगवान् की – जय हो

ढाई द्वीप विराजित निर्ग्रंथ मुनिराजों की – जय हो

अनादि अनिधन जिनागम पंथ – जयवंत हो

अब हाथ जोड़कर पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करके पीली सरसों या पीले चावल (पुष्प) बही खाते पर क्षेपण करें–

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।

श्री सिद्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम् ।।
(परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इसके पश्चात् निम्न श्लोक-मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें-

श्री लीलायतनंमहीकुलग्रहं, कीर्ति प्रमोदास्पदं।
वाग्देवीरति केतन जय रमा क्रीडानिधानं महत् ।।
सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं।
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयं।।

श्री वर्द्धमानाय नमः, श्री मोक्षलक्ष्म्यै नमः ऋद्धिः सिद्धिर्भवतुतराम् श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै नमः मम सर्वसिद्धिर्भवतु, धर्मार्थकाम मोक्षपुरुषार्थश्च कृते कारणं भवतु, सातिशयपुण्यं वर्द्धताम्।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इसके पश्चात् मन ही मन में भगवान् का स्मरण करते हुये संकल्प ग्रहण करें-

हे भगवन् ! बहीखाता अर्थ पुरुषार्थ का साधन है। मेरा अर्थ पुरुषार्थ सदैव धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ का साधन बने। मेरे मन में सदा संतोष की भावना हो, मैं नीति न्याय पूर्वक आजीविका उपार्जन कर सकूँ, ऐसी मुझे शक्ति दो। मेरे कुल की उज्ज्वल कीर्ति सदा बनी रहे।

इस प्रकार से शुद्धि-संकल्प क्रिया संपन्न करना चाहिये।

प्रश्न- दीपावली के दिन जैन श्रावकों में भी लक्ष्मी पूजन, लक्ष्मी स्तोत्र, लक्ष्मी यंत्र-मंत्र पढ़ने, रखने, जपने की प्रथा देखी जाती है, तो क्या दीपावली से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है ?

उत्तर- दीपावली के दिन जैन श्रावक भगवान् महावीर निर्वाण, एवं गौतम गणेश केवली को केवलज्ञान प्राप्ति के प्रयोजन से आराधना करते हैं। इस दिन लक्ष्मी पूजन, स्तोत्र, यंत्र, मंत्र का आडम्बर अज्ञानतापूर्ण है। यह प्रथा दीपावली के बाद कब से

चली ? किसके द्वारा प्रारम्भ की गई ? दीपावली के दिन धनलक्ष्मी आदि की पूजा क्यों करना चाहिये, इसका कोई प्रमाणित उत्तर जैन शास्त्रों में नहीं देखा जाता, अत: अज्ञान मान्यता को छोड़कर धन लक्ष्मी की पूजा नहीं करना चाहिये। मात्र जैन परम्परा एवं मान्यता से अपनी सम्यक् भावना को ही बढ़ाना चाहिये।

प्रश्न– आपने कहा धन की देवी लक्ष्मी आदि की पूजा, स्तोत्र, यंत्र-मंत्र की आराधना नहीं करना चाहिये, फिर लक्ष्मी आदि की मूर्ति तीर्थंकर प्रतिमा के पार्श्वभाग में बनाने की आगम में आज्ञा किस प्रकार है ?

उत्तर–हरिवंश पुराण में जिन प्रतिमा के विषय में सर्ग 5, श्लोक 363 में लिखा है–

नागयक्षयुगेतासां प्रत्येकं सप्रकीर्णके।

सनत्कुमार सर्वाह्न– निर्वृत्तिश्रुतमूर्तिभि:।।

अर्थ– उन प्रतिमाओं के समीप चमर लिये हुये नागकुमार और यक्षों के युगल खड़े हुये हैं, तथा समस्त प्रतिमाऐं सनत्कुमार और सर्वाह्न यक्ष तथा निवृत्ति और श्रुतदेवी की मूर्तियों से युक्त हैं।

–श्री त्रिलोकसार जी में भी कहा है –

सिरिदेवी सुरदेवी सव्वाणहसणक्कुमारजक्खाणं।

रूवाणि व जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होदि।।988।।

अर्थ–तिन जिन प्रतिमानि के पार्श्व विषै श्रीदेवी अर सरस्वती देवी अर सर्वाह्नयक्ष अर सनत्कुमारयक्ष इनके रूप जे आकार ते तिष्ठै हैं। जिन प्रतिमा के निकट इन च्यारणिका प्रतिबिंब हो है।

इहां प्रश्न– जो श्री तौ धनादिक रूप है अर सरस्वती जिनवाणी है। इनका प्रतिबिम्ब कैसें हो हैं ?

ताका समाधान– श्री अर सरस्वती दोऊ लोक विषय उत्कृष्ट हैं तातैं इनका देवांगना का आकार रूप प्रतिबिंब हो हैं। बहुरि दोऊ यक्ष विशेष भक्त हैं। तातैं तिनके आकार हो हैं। बहुरि आठ प्रकार मंगलद्रव्य जिनप्रतिमा कै निकट सौभै है। (टीका– पं. टोडरमल जी)

इस प्रकार उपर्युक्त हरिवंशपुराण, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों में जिन प्रतिमा के निकट क्या होना चाहिये, यह बताने वाले प्रमाण हमें प्राप्त हैं।

लेकिन उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात किंचित् मात्र भी स्वीकार करने योग्य नहीं कि धन देवी लक्ष्मी की पूजा करना चाहिये। जिनप्रतिमा के निकट लक्ष्मी, यक्षादिक के प्रतिबिम्ब जिनेन्द्र भगवान् के माहात्म्य को दिखाने वाले हैं अर्थात् लोक में जिसे उत्कृष्ट माना जाता है, (वास्तव में उत्कृष्ट है नहीं, क्योंकि **''धम्मो मंगलं उक्किट्ठं''** एक धर्म ही उत्कृष्टमंगल हैं, अत:) ऐसी धनदेवी लक्ष्मी भी भगवान् जिनेन्द्र देव की आराधिका भक्त है, यक्षादि भी जिनेन्द्र भक्त हैं, अत: लोकवर्ती सब भव्यजीवो! तुम भी जिनेन्द्र भगवान् के सच्चे आराधक भक्त बनो। न कि जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति से विमुख होकर लक्ष्मी आदि की पूजा करनेवाले बनो।

अत: जिनप्रतिमा के निकट लक्ष्मी आदिक के बिम्ब बने हैं वे जिनेन्द्र भगवान् के मात्र माहात्म्य को बढ़ानेवाले ही जानना चाहिये।

प्रश्न- आपने बताया कि जिनप्रतिमा के निकट यक्षादि के बिम्ब हैं। कोई-कोई उपलक्षण न्यायानुसार क्षेत्रपालादि को भी मानते हैं, तो क्या इनकी पूजा करना, इन्हें भी शरण मानना, मिथ्यात्व कहलाता है।

उत्तर- आपने ठीक जाना, क्षेत्रपालादि को शरण मानकर पूजना मिथ्यात्व के प्रभाव से ही देखा जाता है- ऐसा ही श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा में अशरणानुप्रेक्षा के श्लोक 25 में एवं 27 में दिया गया है।

जइ देवो वि य रक्खदि मंतो तंतो य खेत्तपालो य।
मियमाणं पि मणुस्सं तो मणुया अक्खया होंति ।।25।।

अर्थ- यदि मरते हुये भी मनुष्य को देव, मंत्र, तंत्र और क्षेत्रपाल बचा सकते होते, तो मनुष्य अमर हो जाते।

(इसकी टीका भी देखी जा सकती है)

एवं पेच्छंतो वि हु गह-भूय-पिसाय-जोइणी-जक्खं।

सरणं मण्णइ मूढो सुगाढ़-मिच्छत्त-भावादो।।27।।

अर्थ-ऐसा देखते हुये भी मूढ़ जीव प्रबल मिथ्यात्व के प्रभाव से ग्रह, भूत, पिशाच, योगिनी और यक्ष को शरण मानता है।

(इसकी टीका भी देखी जा सकती है)

अतः मणिभद्र आदि क्षेत्रपालकों को शरण मानना, रक्षक मानना, पूजना अज्ञानभाव ही है।

प्रश्न- लोक में मान्यता है कि दीपावली के दिन लक्ष्मी जी उल्लू की सवारी करते हुये रात्रि में घरों में प्रवेश करती हैं, अतः लक्ष्मी प्राप्ति के लिये दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन करना क्या आवश्यक नहीं मानी जायेगी ?

उत्तर- ऐसी मान्यता वास्तव में धर्मभाव से विपरीत ही जानना, मानना चाहिये। कोई भी देवी-देवता किसी को भी धन लक्ष्मी की प्राप्ति नहीं कराता। यदि लक्ष्मी पूजन करने से धन की प्राप्ति होने लग जाती, तो अनेक विदेशी लोग जो लक्ष्मी आदि की पूजा नहीं करते हैं, वे सभी दरिद्र ही रहते, किन्तु ऐसा नहीं देखा जाता। फिर दीपावली के दिन जो लोग लक्ष्मीपूजन करते हैं, वे भी गरीब क्यों देखे जाते हैं? सच बात तो यह है कि धनादि की प्राप्ति धन लक्ष्मी की पूजा से नहीं अपितु अपने पूर्वकृत शुभकर्म के उदय से होती है, और धनादि की हानि भी लक्ष्मीपूजन न करने से नहीं अपितु पूर्वकृत अशुभ कर्म के उदय से होती है। जैनधर्म की मान्यता कर्म के अनुसार शुभाशुभ फल प्राप्ति की ही है जैसा कि श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा 319-320 में कहा है-

किन्हीं का कहना है कि हरिहर आदि देवता लक्ष्मी देते हैं, उपकार करते हैं, किन्तु ऐसा कहना भी ठीक नहीं है-

ण य को वि देदि लच्छी ण को वि जीवस्स कुणदि उवयारं।

उवयारं अवयारं कम्मं पि सुहासुहं कुणदि ।। 319 ।।

अर्थ- न तो कोई जीव को लक्ष्मी देता है, और न कोई उसका उपकार करता है। शुभाशुभ कर्म ही जीव का उपकार और अपकार करते हैं।

(इसकी टीका भी देखी जा सकती है)

भत्तीएँ पुज्जमाणो विंतर-देवो वि देदि जदि लच्छी।

तो किं धम्में कीरदि एवं चिंतेइ सद्दिट्ठी।।320।।

अर्थ-सम्यग्दृष्टि विचारता है कि यदि भक्तिपूर्वक पूजा करने से व्यन्तर देवी-देवता भी लक्ष्मी दे सकते हैं, तो फिर धर्म करने की क्या आवश्यकता है ?

(इसकी टीका भी देखी जा सकती है)

उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि धन-लक्ष्मी की आकांक्षा से लोक मान्यता का पालन नहीं करना चाहिये अपितु लोक मान्यता को छोड़कर सम्यक् धर्म क्रिया का पालन करना चाहिये, क्योंकि धनलक्ष्मी की प्राप्ति तो मात्र पुण्य से ही होती है।

प्रश्न- जब अपने लोग भगवान् महावीर स्वामी एवं गौतम स्वामी की फोटो रखते हैं और ज्ञान लक्ष्मी की पूजा करते हैं, तो लक्ष्मी की तस्वीर क्यों नहीं रख सकते?

उत्तर- जिनागम में ज्ञान लक्ष्मी की तस्वीर बनाने का विधान नहीं है, अतः जैनधर्मानुयायी श्रावक को लक्ष्मी की तस्वीर नहीं रखना चाहिये। यहाँ ज्ञान लक्ष्मी के प्रतीक चार अनुयोगों के शास्त्र ही रखना चाहिये। फिर जिनागम में अप्रतिष्ठित मूर्ति या चित्र पूजा के योग्य नहीं माने गये हैं, चाहे वह चित्र जिनेन्द्र देव या तीर्थंकर के ही क्यों न हों, इसके विषय में जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में लिखा है-

न मृत्तिका काष्ठविलेपनादिजातं जिनेन्द्रैः प्रतिपूज्यमुक्तं ।।183।।

अर्थात् मृत्तिका, काष्ठ, और चित्राम आदि का जिनबिम्ब पूज्य नहीं कहा है।

अतः भगवान् महावीर स्वामी एवं गौतम स्वामी की तस्वीर स्मृति स्वरूप जानना चाहिये, पूजा योग्य नहीं।

प्रश्न- प्रतिष्ठित मूर्ति एवं अप्रतिष्ठित मूर्ति या चित्र में क्या अंतर माना जायेगा।

उत्तर- प्रतिष्ठित मूर्ति में भगवान् की साक्षात् सन्निधि की भावना है, अर्थात् अभिषेक पूजा के समय मन में यह श्रद्धापूर्ण भावना रहती है, कि मैंने साक्षात् भगवान् का स्पर्श पूर्वक अभिषेक किया, पूजा की। किन्तु तस्वीर में साक्षात् भगवान् की श्रद्धापूर्ण कल्पना नहीं होती, मात्र स्मृति का व्यवहार होता है।

अत: प्रत्येक धर्मानुयायी श्रावक को विवेकपूर्वक जैनधर्म की पद्धति के अनुकूल ज्ञानलक्ष्मी की पूजा एवं दीपावली की आराधना करना चाहिये।

OOO

जिनागम देख श्रद्धा न करने वाला मिथ्यादृष्टि

सुत्तादो तं सम्मं दरिसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि।
सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी।।

—आचार्य नेमिचंद स्वामी

गाथार्थ–सूत्र से समीचीनरूप से दिखलाये गये उस अर्थ का जब यह जीव श्रद्धान नहीं करता है, उस समय से यह जीव मिथ्यादृष्टि हो जाता है।

विशेषार्थ–गाथा 27 में कथित असद्भूत पदार्थ का श्रद्धान करनेवाले सम्यग्दृष्टि को यदि पुन: कोई परमागम का ज्ञाता विसंवादरहित दूसरे सूत्र द्वारा उस असद्भूत अर्थ को यथार्थरूप से बतलावे, फिर भी वह जीव असत् आग्रहवश असद्भूत को ही स्वीकार करे, यथार्थ को स्वीकार नहीं करे तो उसी समय से वह जीव मिथ्यादृष्टित्व को प्राप्त हो जाता है, क्योंकि वह प्रवचनविरुद्ध बुद्धिवाला है, ऐसा परमागम में कहा गया है। इसलिए यह ठीक कहा है कि प्रवचन में उपदिष्ट हुए अर्थ का आज्ञा और अधिगम से विपरीतता के बिना श्रद्धान करना सम्यग्दृष्टि का लक्षण है।

(जय धवला पु. 12, पृ. 321-322)

दीपावली को प्रभातकाल में महावीर निर्वाणोत्सव पर की जानेवाली आराधना, क्रिया-विधि

निर्वाण सम्पत्ति यंत्र

श्री सुप्रभात स्तोत्र

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यद्भवज्जन्माभिषेकोत्सवे,
यद्दीक्षा - ग्रहणोत्सवे यदखिल - ज्ञानप्रकाशोत्सवे।
यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः, पूजाद्भुतं तद्भवैः,
सङ्गीतस्तुतिमंगलैः प्रसरतां, मे सुप्रभातोत्सवः।।1।।

श्रीमन्नतामर - किरीट - मणिप्रभाभि-
रालीढपाद - युग दुर्द्धर - कर्मदूर ।
श्रीनाभिनंदन! जिनाजित! शम्भवाख्य!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।2।।

छत्रत्रय प्रचल चामर वीज्यमान,
देवाभिनन्दनमुने! सुमते ! जिनेन्द्र।
पद्मप्रभा - रुणमणि - द्युतिभासुरांग,
त्वद्ध्यानतोऽस्त सततं मम सुप्रभातम्।।3।।

अर्हन् सुपार्श्व ! कदलीदलवर्ण - गात्र,
प्रालेयतारगिरि - मौक्तिक वर्णगौर।
चन्द्रप्रभ! स्फटिक पाण्डुर पुष्पदन्त,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।4।।

सन्तप्त - काञ्चनरुचे जिनशीतलाख्य!,
श्रेयान्विनष्ट दुरिताष्ट कलंक पंक।
बंधूक - बंधुररुचे जिनवासुपूज्य!,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ।।5।।

उद्दण्डदर्प - करिपो विमलामलांग,
स्थेमन्ननन्तजिदनन्त - सुखाम्बुराशे।

दुष्कर्मकल्मषविवर्जित - धर्मनाथ!,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।6।।

देवामरी - कुसुमसन्निभ - शान्तिनाथ!
कुन्थो! दयागुण-विभूषण-भूषितांग।
देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।7।।

यन्मोह - मल्लमदभञ्जनमल्लिनाथ,
क्षेमङ्करावितथशासन - सुव्रताख्य।
सत्सम्पदा प्रशमितो नमि नामधेय,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।8।।

तापिच्छ - गुच्छरुचिरोज्ज्वल -नेमिनाथ,
घोरोपसर्ग - विजयिन् जिनपार्श्वनाथ।
स्याद्वाद- सूक्ति - मणिदर्पण - वर्द्धमान!
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।9।।

प्रालेयनील - हरितारुण - पीतभासं,
यन्मूर्तिमव्यय - सुखावसथं मुनीन्द्राः।
ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां,
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम्।।10।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, माङ्गल्यं परिकीर्तितम्।
चतुर्विंशतितीर्थानां, सुप्रभातं दिने दिने ।।11।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, श्रेयः प्रत्यभिनन्दितम्।
देवता ऋषयः सिद्धाः, सुप्रभातं दिने दिने ।।12।।

सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य महात्मनः।
येन प्रवर्तितं तीर्थ, भव्यसत्त्व-सुखावहम्।।13।।

सुप्रभातं जिनेन्द्राणां, ज्ञानोन्मीलित चक्षुषाम्।
अज्ञान तिमिरांधानां, नित्यमस्तमितो रविः।।14।।

सुप्रभातं जिनेन्द्रस्य, वीरः कमललोचनः।
येन-कर्माटवी दग्धा, शुक्लध्यानोग्रवह्निना।।15।।

सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमङ्गलम्।
त्रैलोक्यहितकर्त्तॄणां, जिनानामेवशासनम्।।16।।

(इतिश्री सुप्रभात स्तोत्र)

श्री सुप्रभात स्तोत्र

(पद्यानुवाद - श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

हे जिनेन्द्र! स्वर्गावतरण तव, हुआ जन्म अभिषेकोत्सव,
दीक्षाग्रहण समय उत्सव जो, केवल ज्ञान प्रभा उत्सव।
गायन संग हुई जो पूजा, संस्तुतियाँ निर्वाणोत्सव,
उसी तरह हो मंगलकारी, मेरा सुप्रभात उत्सव।।1।।

देवगणों के मुकुट जहाँ पर, नत होते हों आनंदित,
खचित महामणि आभाओं से, चरण युगल हैं स्पर्शित।
कर्म विजेता हे नाभि सुत! अजितनाथ! संभव भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।2।।

तीन छत्र मस्तक पर शोभित, ढुरते हुये चँवर गतिमान,
हे देवाधिदेव अभिनंदन-मुनि! हे सुमतिनाथ भगवान्।

हे पदम्प्रभु जिन! तव तन द्युति, पदम्राग मणि प्रभा समान,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।3।।

कदलीदल सम देहवर्ण शुभ, हे सुपार्श्व! अर्हन् भगवान्,
रजतगिरि हिमगिरि सित मुक्ता-सम हे चंदप्रभु भगवान्।
पुष्पदंत जिन! धवल विमल शुचि, शुद्ध स्फटिकमणी समान।
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।4।।

हे शीतल जिन! शोभित तव तन, तपे स्वर्ण की कांति समान,
पापरूप वसुकर्म पंकमल- नाशे हे श्रेयांश भगवान्!।
लाल-लाल बंधूक पुष्प सम, तव तन वासुपूज्य भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।5।।

उद्धत कामबली जेता हे विमल! अमल तनधारी आप,
हे अनंत जिन! नंत सुखार्णव, महाधैर्य का प्रखर प्रताप।
दुर्धर कर्म कलुष से विरहित, धर्मनाथ जिनवर भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।6।।

शांतिनाथ हे शांति प्रदाता, शोभित अमरी पुष्प समान,
कुन्थनाथ जिन! अहा विभूषित दयारूप निजगुण सुखखान।
तीर्थनाथ देवाधिदेव तारो हे अरहनाथ भगवान्!
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।7।।

मोहमल्ल के हे मदभंजक मदन विजेता मल्लिनाथ,
शिवकारी सत्शासनधारी ऐसे हे मुनिसुव्रतनाथ।
परमशांतमय सत्य संपदा धारक नमिनाथ भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।8।।

उज्ज्वल कांति तमाल वृक्ष सम शोभित नेमिनाथ भगवान्,
जीत लिये उपसर्ग भयंकर, क्षमामूर्ति हे पार्श्व महान।
स्याद्वाद सिद्धान्तमणी को वर्द्धमान आदर्श समान,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।9।।

श्वेत, नील अरु हरित, लाल वा पीतवर्ण से शोभित तन,
जो अविनाशी शिवसुखवासी जिनका ध्यान करें मुनिजन।
ढाई द्वीप के तीर्थ प्रवर्तक, सत्तर एक शतक भगवान्,
सुप्रभात हो मेरा हे जिन! करते सतत् आपका ध्यान।।10।।

तीर्थङ्कर चौबीस का, प्रतिदिन प्रातः ध्यान।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, मंगल कहा महान।।11।।

देव सिद्ध मुनिसंघ का, प्रतिदिन प्रातः ध्यान।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, श्रेय रूप सुखखान।।12।।

किया प्रवर्तन तीर्थ का, भविजन को सुखथान।
उन महान वृषभेष का प्रातः उत्तम ध्यान।।13।।

नित्योदित रवि ज्ञान से, मिटा तिमिर अज्ञान।
अहा! खुले नयनांध कर सुप्रभात जिन ध्यान।।14।।

किया कर्मवन दग्ध पा-तैजस शुक्लध्यान।
कमल नयन जिन वीर का, सुप्रभात शुभध्यान।।15।।

है जिनेन्द्र शासन अहा! तीन लोक हितभूप।
सुप्रभात नक्षत्र शुभ, शिवं सुमंगल रूप।।16।।

(इतिश्री सुप्रभात स्तोत्र)

श्री महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भांति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसंतोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग - प्रकटन परो भानुरिव यो,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ।।1।।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल - युगलं स्पंद-रहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित - मयी वाति-विमला,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।2।।

नमन्नाकेन्द्राली मुकुट - मणि - भाजाल - जटिलं,
लसत्पादाम्भोज - द्वयमिह यदीयं तनुभृतां।
भवज्ज्वाला - शांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।3।।

यदर्चा - भावेन प्रमुदित - मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगण - समृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुख - समाजं किमु तदा,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।4।।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति - वर - सिद्धार्थ तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत - भव - रागोद्भुत - गतिर्,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।5।।

यदीया वाग्गङ्गा विविध - नय - कल्लोल - विमला,
वृहज्ज्ञानांभोभि - र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानी - मप्येषा बुधजन - मरालै: परिचिता,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।6।।

अनिर्वा - रोद्रेकस् - त्रिभुवनजयी काम - सुभटः,
कुमारावस्थाया-मपि निज - बलाद्येन विजितः।
स्फुरन् - नित्यानन्द प्रशम - पद राज्याय स जिनो,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।7।।

महामोहातंक - प्रशमन - पराकस्मिक - भिषङ्,
निरापेक्षो बन्धु - र्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृता - मुत्तमगुणो,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)।।8।।

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दुना कृतं।
यः पठेच्छ्रणु-याच्चापि स याति परमां गतिम्।।
(इतिश्री महावीराष्टक स्तोत्र)

श्री महावीराष्टक स्तोत्र

(पद्यानुवाद–श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

व्यय – उत्पाद – ध्रौव्यमय सब ही भाव चराचर अन्तरहित,
दर्पण सम चैतन्यज्ञान में होते युगपत् प्रतिबिम्बित।
जगप्रत्यक्षी मोक्षमार्ग को प्रगट कर रहे सूर्य समान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।1।।

दोनों नयन कमल जिनके निस्पंद लालिमाहीन अहा!,
अंतर – बाहर क्रोध न कण भर जन–जन को यह प्रगट किया।
परमशान्तिमय मूरत जिनकी है अति – निर्मल आभावान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।2।।

वन्दन करते देवगणों के मुकुटमणि झिलमिल – झिलमिल,
आभा से हो उठे सुशोभित, कांतिमान तव चरण–कमल।
भवज्वाला के शमन हेतु जग जन को जल सम जिनका ध्यान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।3।।

जब अर्चा के भाव संजो शुभ प्रमुदितमन मेंढक इह–लोक,
अणिमा– महिमागुणयुत सुखनिधि, पा सकता क्षण में दिविलोक।
तब सद्भक्त मोक्ष सुख पावें इसमें क्या आश्चर्य महान्?
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।4।।

स्वर्णाभा सी दीप्ति देह फिर भी विदेह हे ज्ञान निकर,
आत्मनैक पर एक जन्मगत हो सुत सिद्धारथ नृपवर।
कहलाते भव – राग – विगत प्रभु हो बहिरंग लक्ष्मीवान्,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।5।।

जिनके शुभ वचनों की गंगा नाना नय कल्लोल विमल,
विपुल ज्ञान जल से जग जन का जो करती अभिषेक अमल।
परिचित है बुधजन हंसों से संप्रति में यह गंग महान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।6।।

मदन महाभट चंडवेग युत् दुर्निवार त्रयलोकजयी,
निजबल से कौमार दशा में जीता हुये काम विजयी।
नित्यानन्द – स्वभावी शिवपद राज प्राप्ति का ध्येय महान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।7।।

मोह रोग प्रशमन करने हो वैद्य अकारण नित तत्पर,
हे निरपेक्ष! परम बन्धु! हे विदित महिम! हे मंगलकर!
भवभीरु साधकजन को शुभ शरण आप उत्तम गुणवान,
मेरे लिये नयनपथगामी होवें महावीर भगवान्।।8।।

महावीर भगवान का आठपद्य गुणगान,
पढ़े - सुने जो भाव से वह पाता शिवथान।
''भागचन्द्र'' द्वारा रचित भक्ति भाव प्रधान,
है ''विमर्श'' अंतिम यही मिट जाये अज्ञान।।9।।

(इतिश्री महावीराष्टक स्तोत्र)

श्री नवदेवता स्तोत्र-मंगलाष्टक

श्रीमन्तो जिनपा - जगत्त्रयनुता दोषै - र्विमुक्तात्मकाः।
लोकालोक विलोकनैक चतुराश्शुद्धाः परं निर्मलाः।।
दिव्यानन्त-चतुष्टयादिक युताः सत्य स्वरूपात्मकाः।
प्राप्तायै - र्भुवि प्रातिहार्य विभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

श्रीमन्तो नृ सुरा सुरेन्द्र महिता, लोकाग्र संवासिनः।
नित्याः सर्व सुखाकरा भयहरा, विश्वेषु कामप्रदाः।।
कर्मातीत विशुद्ध भाव सहिता, ज्योतिः स्वरूपात्मकाः।
श्री सिद्धा जननार्ति - मृत्यु-रहिताः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

पंचाचार परायणाः सुविमलाश्चारित्र संद्योतकाः।
अर्हद्रूप धराश्च निस्पृह पराः, कामादि दोषोज्झिताः।।
बाह्याभ्यन्तर-संग-मोह-रहिताः शुद्धात्म संराधकाः।
आचार्या नरदेव-पूजित-पदाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

वेदांगं निखिलागमं शुभतरं पूर्णं पुराणं सदा।
सूक्ष्मासूक्ष्म समस्त तत्त्व कथकं, श्रीद्वादशांगं शुभम्।।
स्वात्मज्ञान विवृद्धये गतमलाः येऽध्यापयन्तीश्वराः।
निर्द्वन्द्वावर पाठकाः सुविमलाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

त्यक्त्वाशां भव भोग पुत्रतनुजां, मोहं परं दुस्त्यजं।
निःसगां-करुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीधनाः।।
शुद्धाचार-रता निजात्म रसिका ब्रह्म स्वरूपात्मका।
देवेन्द्रैरपि पूजिताः सुमुनयः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

जीवानाम् भयप्रदः सुसदयः संसार - दुःखापहः।
सौख्यं योनितरां ददाति सकलं, दिव्यं मनोवाञ्छितम्।।
तीर्थेशै - रपि - धारितोह्यनुपमः स्वर्मोक्ष संसाधकः।
धर्मः सोऽत्र जिनोदितो हितकरः कुर्यात्सदा मंगलम्।।6।।

स्याद्वादांकधरं त्रिलोक महितं, दैवं सदा संस्तुतं।
सन्देहादि विरोधभाव रहितं सर्वार्थ सन्देशकम्।।
याथातथ्य - मजेय - माप्त कथितं, कोटि प्रभा भासितं।
श्री - मज्जैन सुशासनं हितकरं, कुर्यात्सदा मंगलम्।।7।।

सौम्याः सर्वविकार भाव रहिताः, शांति - स्वरूपात्मकाः।।
शुद्धध्यानमयाः प्रशान्त वदनाः, श्री प्रातिहार्यान्विताः।।
स्वात्मानन्द विकाशकाश्च सुभगाश्चैतन्य भावावहाः।
पञ्चानां परमेष्ठिनां हि कृतयः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

घण्टा तोरण दाम धूप घटकै, राजन्ति सन्मंगलैः।
स्तोत्रैश्चित्त - हरै - र्महोत्सव शतै - र्वादित्र संगीतकैः।।
पूजारम्भ महाभिषेक यजनैः, पुण्योत्करैः सत्क्रियैः।
श्री चैत्या - यतनानि तानि कृतिनां, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।9।।

इत्थं मंगल दायका जिनवरा सिद्धाश्च सूर्यादयाः।
पूज्यास्ता नव देवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारकाः।।
चारित्रो ज्वलतां विशुद्ध शमतां, बोधिं समाधिं-तथा।
श्री जैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखदं, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।10।।

(इति श्री नवदेवता स्तोत्र - मंगलाष्टक)

लघु अभिषेक पाठ

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।

समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमीति स्वाहा।

(जल से शुद्धि करें)

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,

स्याद्वादनायक-मनन्त चतुष्टयार्हम् ।

श्री मूलसंघ - सुदृशां सुकृतैक हेतुर्,

जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि ।।1।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

सौगन्ध्य-सङ्गत-मधुव्रत झंकृतेन,

सम्वर्ण्य-मानमिव गन्धमनिन्द्य-मादौ।

आरोपयामि विबुधेश्वर-वृन्द-वन्द्य-

पादारविन्द-मभिवन्द्य जिनोत्तमानाम् ।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु स्वाहा।

(यह पढ़कर चंदन से नवांगी तिलक लगाना व हाथ धोना)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य-कुल-प्रसूताः,

नागाः प्रभूत-बल-दर्पयुता विबोधाः।

संरक्षणार्थ - ममृतेन शुभेन तेषां,

प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ।।3।।

ॐ ह्रीं जलेनं भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(यह पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,

प्रक्षालितं सुरवरै - र्यदनेकवारम् ।

अत्युच्च-मुद्यत-महं जिनपाद पीठं,

प्रक्षालयामि भव-सम्भव-तापहारि ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है उस थाली को धोवें)

श्री शारदा-सुमुख-निर्गत-बीजवर्ण,

श्री मङ्गलीक-वर-सर्व-जनस्य नित्यम्।

श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं,

श्रीकार-वर्ण-लिखितं जिन भद्रपीठे ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीकार लेखनं करोमि।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है उस थाली में 'श्री' लिखें)

यं पाण्डुकामल-शिलागतमादिदेव-

मस्ना - पयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।

कल्याण-मीप्सुरह-मक्षत-तोय-पुष्पैः,

सम्भावयामि पुर एव तदीय-बिम्बम् ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनम् करोमि स्वाहा।

(यह पढ़कर श्रीवर्ण पर प्रतिमा स्थापन करना चाहिए)

सत्पल्लवार्चित-मुखान्-कलधौतरौप्य-

ताम्रारकूट-घटितान्पयसा सुपूर्णान्।

सम्वाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,

संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते ।।7।।

ॐ ह्रीं स्वहस्तये चतुःकोणेषु कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।

धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूरावनम्र सुरनाथ-किरीट-कोटी-

संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूसराङ्घ्रिम्।

प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तिमपि प्रकृष्टैर,
भक्त्या जलैर्जिनपतिं, बहुधाभिषिञ्चे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विन्शति तीर्थङ्कर परं देवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरत क्षेत्रे-आर्य खण्डे- भारत देशे............... प्रदेशे...............जिले............. मासे............... पक्षे................वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक- श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के ऊपर जल की धारा देवें, देखें ताके कर्मन की क्षय)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इष्टैर्मनोरथ-शतैरिव भव्य पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण कलशै-र्निखलै-र्वसानैः।
संसार सागर-विलंघन, हेतु-सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक-पतिं जिनेन्द्रम् ।।9।।

(यहाँ चारों कलश से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विन्शति तीर्थङ्कर परं देवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरत क्षेत्रे-आर्य खण्डे-भारत देशे...............प्रदेशे...........जिले............ .मासे ....पक्षे...............वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक-श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(मुनि, आर्यिका, श्रावक–श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के ऊपर जल की धारा देवें, देखें ताके कर्मन की क्षय।)

पानीय-चंदन-सदक्षत-पुष्प पुंज,
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फल व्रजेन।
कर्माष्टक क्रथन वीर–मनंत शक्तिं,
संपूजयामि महसा महसां निधानम्।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा-मुहुर्निज करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितांतरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब मार्जनं करोमि।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं सिंहासन स्थित अर्हत् देवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इतिश्री लघुअभिषेक पाठ)

लघु शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्री पार्श्वतीर्थंकराय, द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान-पवित्राय, सर्वज्ञाय स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसारचक्र परिमर्दनाय, अनंत दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म-विनाशनाय, अघातिकर्म-विनाशनाय, (शांतिधारा कर्ता का नाम) अपवादं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। मृत्युं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। अतिकामं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। रतिकामं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। क्रोधं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। अग्निं भयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वशत्रुं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वोपसर्गं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वविघ्नं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वराज्यभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वचोरभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वदुष्टभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वमृगभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वपरमंत्रं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वशूलरोगं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वक्षयरोगं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वकुष्ठरोगं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वक्रूररोगं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वनरमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वाश्वमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वगोमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वमहिषमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वधान्यमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्ववृक्षमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वगुल्ममारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व पुष्पमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वफलमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्वराष्ट्रमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व देशमारीं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व विषमारीं छिन्धि

छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व वेतालशाकिनीभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व वेदनीयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व मोहनीयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। सर्व कर्माष्टकं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

ॐ सुदर्शन-महाराज-चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरु कुरु। सर्व जनानंदनं कुरु कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु कुरु। सर्व गोकुलानन्दनं कुरु कुरु। सर्व ग्रामनगर-खेटकर्वटमटंबपत्तणद्रोणमुख संवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु। सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु। सर्व दुःखं, हन हन, दह दह, पच पच, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितं।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।।
शिवमस्तु ! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु।
चन्द्रप्रभ-वासूपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदन्त-
शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गंधोदक धारा वर्षणं।)

श्री शांतिरस्तु, शिवमस्तु, जयोऽस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म बल आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतुः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षाम-डामर विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्व विश्वस्य तथैव मम (शांतिधारा कर्ता का नाम) सर्व शांतिं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शान्तिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां,
शान्तिः निरन्तर तपोभव भावितानां।
शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां,
शान्तिः स्वभाव महिमान-मुपागतानां।
संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय शान्तिधारा अभिषेकान्ते अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(इतिश्री लघुशांतिधारा)

निर्मलं निर्मली करणं पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वंदे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।

OOO

[redacted]

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कन्त तुम, तीन भुवनके राज ।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार।।3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण रास।।4।।

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान-भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं बन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछु उपाव।।6।।

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।8।।

तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।9।।

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भैंट्यो अबै, मैंटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्यभाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं कीजै आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ।।19।।

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।

बन्दों पाँचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघ्न हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु 'नमि', रच्योपाठ सुखदाय।।22।।

मङ्गल मूरति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान।।23।।

मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हत देव।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव।।24।।

मङ्गल आचारज मुनी, मङ्गल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मङ्गल करों, बन्दों मन वच काय।।25।।

मङ्गल सरस्वति मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मङ्गलकरन से, जग में मङ्गल होत।
मङ्गल नाथूराम यह, भवसागर दृढ़ पोत।।27।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा - अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि - अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवली पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(ॐ नमोऽर्हते स्वाहा)

(परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्रोऽयं, सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी-निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याण-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घं निर्व. स्वाहा।

पंचपरमेष्ठि का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसूत्र का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसूत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा-प्रतिज्ञा-पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र - मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायकमनंत - चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ - सुदृशां सुकृतैक - हेतुर्-
जैनेन्द्र - यज्ञ - विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय,
स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृंग्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।। 2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल - बोध - सुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव - परभाव विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक - विततैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल - सकलायत - विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि - मधिकामधि - गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।

अर्हत्पुराण - पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनून - मखिलान्यय - मेकएव।
अस्मिन्ज्वलद्विमल - केवल - बोधबन्हौ,
पुण्यं समग्र - महमेकमना जुहोमि ।। 5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।

श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।

श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।

श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।

श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।

श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।

श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्ति।

श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।

श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।

श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।

श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानम्। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षिस्वस्ति-मंगल

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

कोष्ठस्थ - धान्योपममेकबीजं, संभिन्न - संश्रोतृ -पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा,- दास्वादन घ्राण - विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा - प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।

जंघानल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण - स्वैर - विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः।।5।।

अणिम्निदक्षाःकुशलामहिम्नि, लघिम्निशक्ताःकृतिनोगरिम्णि।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशी - र्विषाविषा - दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवन्तो, मधुस्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

इति परम-ऋषि स्वस्ति मंगल विधानं (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(श्रमणाचार्य विमर्शसागर कृत)

हे आत्मज्ञ! सर्वज्ञ प्रभो! शुद्धात्मनिधि को प्रगटाया।
जड़ द्रव्य - भाव नोकर्मों की , संतति को क्षण में विघटाया।।
जिनवाणी में सम्यक् तत्त्वों का, नित शीतल निर्झर झरता।
निर्ग्रंथ गुरु का शुभ दर्शन, अन्तरमन का कालुष हरता।।
शुभ तीन महानिधियों को पा, रत्नत्रय निधि प्रगटाऊँगा।
श्री देवशास्त्र निर्ग्रंथ गुरु की , पूजा नित्य रचाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।
(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

क्षीरोदधि से, गंगाजल से, तन को स्नान कराया है।
सम्यक्त्व शुद्धजल से अब तक, आतम को न नहलाया है।।
मिथ्यात्व असंयम भावों की, परिणति से मुक्त करो स्वामिन्।
निर्मल जल चरणों में अर्पित, हमको सम्यक्त्व वरो स्वामिन्।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक इन्द्रिय विषयों में ही, उपयोग मेरा रमता आया।
स्वामिन्! जड़ के आकर्षण से, चारों गति में भ्रमता आया।।
अब भेदज्ञान का चंदन ले, भवताप मिटाने आया हूँ।
अशरीरी सिद्ध प्रभु जैसी, स्थिरता पाने आया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में पाये पद अनन्त, तृष्णा न शान्त हुई मेरी।
पद पा सोचूँ 'मैं भी कुछ हूँ', यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।।
अविनाशी अक्षय पद पाने, अक्षत का पुंज चढ़ाता हूँ।
चैतन्यधाम में रहूँ सदा, नित यही भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर भोगों के ईंधन से, क्या काम अग्नि बुझ सकती है।
जितना ईंधन डालो इसमें, यह उतनी तेज धधकती है।।
हूँ चिदानन्द चिद्रूप शुद्ध, निज ब्रह्मचर्य में वास करुँ।
चरणों में सुमन समर्पित हैं, इस कामभाव का नाश करुँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म असंख्य प्रदेशों से, शमरस के झरने झरते हैं।
पी तृप्त हुआ करते ज्ञानी, जो निज में सदा विचरते हैं।।

मैं क्षुधारोग से पीड़ित हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
नैवेद्य समर्पित चरणों में, निज समरस पीने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म प्रकाशी ज्ञान दीप, समकित से ज्योतिर्मय होता।
मिथ्यात्व तिमिर के नशते ही, अनुभव शुद्धात्म प्रखर होता।।
निज द्रव्य और गुण पर्यय से, इक क्षण अभेदता प्राप्त करुँ।
ज्योतिर्मय दीप समर्पित है, दर्शन मोहान्ध समाप्त करुँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म तत्त्व में तन्मयता, निश्चय तप आग जलाती है।
तब सहज शुभाशुभ कर्मों की,कालुष उसमें जल जाती है।।
शुभ धूप दशांग चढ़ाता हूँ, मेरी शुध परिणति अन्वय हो।
कर्मों की कालुष जल जाये, शुद्धात्म तत्त्व में तन्मय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म निराकुल सुख यह फल,शुद्धात्म ध्यान से फलता है।
निज वीतराग की परिणति से,यह मोक्ष महाफल मिलता है।।
अविनाशी ज्ञान शरीरी बन, निज में अनंत बल प्रगटाऊँ।
अर्पित करता फल चरणों में, निर्भार अतीन्द्रिय फल पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महामोक्ष-फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परम पारिणामिक स्वभाव, ज्ञायक होकर प्रगटाया है।
अरिहंत प्रभु की वाणी में, शुद्धात्म सार यह आया है।।
निज परम पारिणामिक स्वभाव, ऐसा अनर्घ पद मिल जाये।
शुभ अर्घ समर्पित करता हूँ, चेतन गुण बगिया खिल जाये।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दर्शन-ज्ञानोपयोग युगपत्, तिहुँकालों सहज प्रवर्त्त रहा।
शुद्धात्म अतीन्द्रिय सुख प्रतिक्षण, नूतन-नूतन अनुवर्त्त रहा।।

सम्पूर्ण द्रव्य-सहभावी-गुण, उनकी क्रमवर्ती-पर्यायें।
परिपूर्ण ज्ञान में प्रतिबिम्बित, सम्बन्ध सहज ज्ञानी गायें।।

अविनाशी अनुपम अचल निधि, ''श्री'' अन्तरंग में हुई प्रगट।
जब कर्म घातिया नष्ट हुये, थी उनकी भी सामर्थ्य विकट।।

शुद्धात्म ध्यान की ले कुठार, संवर जब-जब आगे आता।
आस्रव के पैर ठिठक जाते, निर्जरा तत्त्व हँसकर जाता।।

शुद्धात्म ध्यान तप की महिमा, प्रभु सहज आपने पाई है।
शुद्धात्म ध्यान मैं भी पाऊँ, मन में प्रभु यही समाई है।।

निज ज्ञायक प्रभु की प्रभुता को, ज्ञायक बनकर ही पाऊँगा।
शुद्धात्म प्रदेशों का अमृत, पीकर अमूर्त प्रकटाऊँगा।

हूँ चिदानन्द चैतन्यप्रभु, यह बात आपने बतलाई।
शुद्धात्म सार का कथन जहाँ, वह जिनवाणी माँ कहलाई।।

प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, में सार वही।
द्रव्यानुयोग जिसकी महिमा, कहता उसके अनुसार वही।।

स्याद्वादमयी जिनवाणी माँ, जो अनेकान्त को कहती है।
सच कहता प्रभु सच्ची श्रद्धा, मेरे अन्तस में रहती है।।

जिनवाणी माँ को पाकर ही, कलिकाल हुआ मंगल मेरा।
प्रभु आप विदेह विराजे हो, फिर भी सान्निध्य मुझे तेरा।।

जिनवाणी माँ के आश्रय से, निर्ग्रंथ गुरु का दर्शन है।
शुद्धात्मलीन इन श्रमणराज, चरणों का नित स्पर्शन है।।

चैतन्यराज की महिमा को, इन श्रमणराज ने जाना है।
शुद्धात्म सरोवर की निधियाँ, पाना यह मन में ठाना है।।

शुद्धात्म तत्त्व का कथन सार, श्री गुरु मुख से जब झरता है।
मन हिरण आत्म उपवन में तब, नित सहज कुलाँचें भरता है।।

हे तपोमूर्ति ! निर्ग्रंथ गुरु, मेरा अन्तरतम दूर करो।
शुद्धात्म तत्त्व को प्राप्त करूँ, मन में भक्ति भरपूर करो।।

हे देव-शास्त्र निर्ग्रंथ गुरु, पूजन में हर्षित अन्तरमन।
सम्यक् 'विमर्श' नित शरण मिले, स्वीकारो बारम्बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुपूजा प्रभुध्यान से, हों निर्मल परिणाम।
स्वर्गादिक सुख भोगकर, मिले मोक्ष निष्काम।।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

श्री महावीर जिन पूजा

(श्रमणाचार्य विमर्शसागर कृत)

हे वर्धमान! अतिवीर वीर महावीर सन्मति मतिदायक।
शिवपथ परिचायक, सुखदायक जय वर्तमान शासन नायक।।
तुम धीर - वीर हम हैं अधीर मम हरो पीर मुक्तिदायक।
भवसिंधु तीर दो कर्मवीर तुम सम हम बन जायें ज्ञायक।।

खुद जियो और जीने दो, यह संदेश देशना में आया।
निश्चय व्यवहार अहिंसा का सम्यक् पथ तुमने दिखलाया।।
इस पथ का राही बनना है, यह भाव सजा कर लाया हूँ।
आओ हृदयासन पर आओ, गुणपूजा करने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

हूँ द्रव्यदृष्टि से जन्म रहित ऐसा प्रभु तुमने जाना था।
पर्यायदृष्टि से जन्म-मरण वस्तु में होता माना था।।
यह संसारी पर्याय मेरी नित जनम-मरण दुःख देती है।
निज द्रव्याश्रित पर्याय मिले, जो आतम सुख को देती है।।
जन्म जरा मृतु नाश हो, दो ऐसा वरदान।
जल ले तव गुण पूजता, महावीर भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य जलधि के आश्रय से, तुमने भवताप मिटाया है।
भव-भव की पीड़ा को स्वामिन्, क्षणभर में आप नशाया है।।
हम भववारिधि के आश्रय से, संसार बढ़ाते आये हैं।
चैतन्यजलधि-भववारिधि का अन्तर यह समझ न पाये हैं।।
भववारिधि - चेतनजलधि भेदज्ञान से जान।
चन्दन ले गुण पूजता, महावीर भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अखण्ड शुद्धातम जब निज पर्यायों में आता है।
तब सहज सिद्ध भगवानों सा अक्षय पद भी मिल जाता है।।
अक्षय पद की अब चाह मुझे, त्रयलोक पदों से अकुलाया।
सुन महिमा सुयश तुम्हारा प्रभु, अक्षत भावों को भर लाया।।

आत्मज्ञान से अब हुआ, अक्षय पद का भान।
अक्षत ले गुण पूजता, महावीर भगवान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्व. स्वाहा।

निष्काम आत्मा के आश्रित, निश्चय ब्रह्मचर्य प्रगटता है।
पर से उपयोग स्वयं हटता, निज में उपयोग सिमटता है।।
कामादिक भावों के कारण, आकुलता अब तक पाई है।
सब काम भाव विध्वंस करूँ, मन में अब यही समाई है।।
ब्रह्मचर्य से हो सहज, कामभाव अवसान।
पुष्प लिये गुण पूजता, महावीर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

हो चिदानन्द आश्रित तुमने, निज चिदानन्द रसपान किया।
ना क्षुधा रोग छू सका तुम्हें, ऐसा पुरुषार्थ महान किया।।
मिष्ठान्न व्यंजनों से अब तक, मैं क्षुधा मिटाता आया हूँ।
चेतन का उत्तम उपशम रस, हे नाथ! लुटाता आया हूँ।।
क्षुधा रोग का नाश हो, जो सब दुःख की खान।
गुण पूजूँ नैवेद्य ले, महावीर भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जब तुम चैतन्य प्रकाश किया, मोहान्धकार का नाश हुआ।
जिस मोह कर्म के कारण ही, चेतन पुद्‌गल का दास हुआ।।
हम भी यह मोह तिमिर स्वामिन्!, अब आज हटाने आये हैं।
चेतन प्रकाश उजियाला हो, यह भाव हृदय में लाये हैं।।
दर्शन चारित मोह को नाशूँ कर निज ध्यान।
दीपक ले गुण पूजता, महावीर भगवान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा

आठों कर्मों के कारण ही, चारों गति में भरमाया हूँ।
निज वैभाविक परिणति से प्रभु क्लेशित हूँ बहुत सताया हूँ।।

आश्रित हो ज्ञान चेतना के आठों कर्मों को दहकाया।
मैं भी ऐसा पुरुषार्थ करूँ, इसलिये नाथ चरणों आया।।
अष्टकर्म दहकाऊँगा, कर शुद्धातम ध्यान।
धूप लिये गुण पूजता, महावीर भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

शाश्वत शिवफल को पा तुमने, निष्फल जग को ठुकराया है।
व्यवहार और निश्चय पथ को, मुक्ति, का साधन गाया है।।
हे नाथ! इसी पथ पर चलकर, मैं भी मुक्तिफल पाऊँगा।
तुम सम अरिहन्त दशा पाकर, सिद्धत्व अवस्था पाऊँगा।।
सच्चाफल शिवफल अहा, निज अनुभूति प्रधान।
फल ले तव गुण पूजता, महावीर भगवान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, शुभ दीप धूप फल लाया हूँ।
आठों द्रव्यों का अर्घ बना, मैं कनकथाल भर लाया हूँ।।
दैदीप्य अर्घ अर्पित करता, स्वामिन् अनर्घपद पाने को।
निर्दोष आत्मा पाना है, आया हूँ दोष मिटाने को।।
इक अनर्घपद चाहता शुद्ध स्वरूप समान।
अर्घ लिये गुण पूजता, महावीर भगवान।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(तर्ज - मुनि मन सम उज्जवल नीर प्रासुक गंधभरा)

आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गरभ में प्रभु आये।
सुरपति सुर गर्भोत्सव मनाकर हर्षाये।

त्रिशला उर में रहते मोती ज्यों शीप बसा।
हम पूजैं प्रभु भावी अहा अरिहन्त दशा।।

ॐ ह्रीं आषाढ़-शुक्ला-षष्ठ्यां गर्भावतरण-मंगल-प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्ं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सित तेरस चैत महान तुमने जन्म लिया।
सिद्धार्थ पिता घर द्वार तुमने धन्य किया।।
कुण्डलपुर जन्मोत्सव मनाता इन्द्र लसा।
हम पूजैं प्रभु भावी अहा अरिहन्त दशा।।

ॐ ह्रीं चैत्र-शुक्ला-त्रयोदश्यां जन्म-मंगल-प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मंगसिर कृष्णा दसमी तुमने तप धारा।
थी तीस वर्ष आयु तजा घर-परिवारा।।
तप कल्याणक पूजा देव करते हर्षा।
हम पूजैं तप के साथ अहा अरिहंत दशा।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

वैशाख शुक्ल दसमी, घाति क्षय कर डाला।
प्रभु प्रगटा केवलज्ञान फैला उजियाला।।
चौथा कल्याणक देव पूजैं अति हर्षा।
हम पूजैं प्रभु तेरी अहा अरिहन्त दशा।।

ॐ ह्रीं वैशाख-शुक्ला-दशम्यां ज्ञानकल्याणक-प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

कार्तिक कृष्णामावश मुक्ति को पाया।
पावापुर हुआ पवित्र, तीरथ कहलाया।।

प्रभु कल्याणक निर्वाण पूजैं सुर हर्षा।
हम पूजैं धरि शुभ भाव प्रभु निर्वाण दशा।।

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्णा-अमावस्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जयमाला

जय त्रिशलानन्दन वीर प्रभो! सिद्धार्थ तनय महावीर प्रभो!।
जय भवसागर के तीर प्रभो!, जय गुणसागर अतिवीर प्रभो।।

तुम कुण्डलपुर में जन्म लिया, देवों ने उत्सव खूब किया।
होती थी रत्नों की वर्षा, हर जन-जन था हर्षा-हर्षा।।

सुर नर किन्नर गुण गाते थे, हर्षाते मोद मनाते थे।
वीणा सारंगी ढोल वाद्य बजते थे, नृत्य दिखाते थे।।

झननं झननं झंकार सजे, घननं घननं घनघंट बजे।
तननं तननं ततता वितता, छननं छननं अतता सुगता।।

धृगतां धृगतां धृगतां धृगतां, दृगतां दृगतां दृगतां दृगतां।
ताथेई ताथेई सुर चाल चलें, चटपट अटपट नभ में उछलें।।

फिर झुक - झुक जय - जयकार करें, स्तुति गा हर्ष अपार धरें।
सब ही प्रभु तुमको ध्याते थे, अपना कल्याण मनाते थे।।

जब तीस वर्ष में तप धारा, तज दिया मोह घर-परिवारा।
न रोक सकी माँ की ममता, प्रगटी अन्तस में दृढ़ समता।।

उपसर्ग न तुमको डिगा सके, भय के अंकुर न उगा सके।
परिषह समता से सहते थे, मुख से कुछ भी न कहते थे।।

चन्दनबाला को तार दिया, जाकर द्वारे आहार लिया।
बारह वर्षों तप ध्यान किया, निज चिदानन्द रसपान किया।।

चउ कर्म प्रकृति त्रेसठ नाशी, पाई केवलनिधि अविनाशी।
तुम आचारांग प्रथम गाया, खुद जियो जीने दो बतलाया।।

आतम-अनात्म का ज्ञान करो, निर्णय कर लो श्रद्धान करो।
सुन दिव्यध्वनि भवि हर्षाये, व्रत संयम के उत्सव छाये।।

कोई धर्मध्यान में लीन हुये, कोई शुक्ल ध्यान प्रवीण हुये।
प्रभुजी तुमने उपकार किया, भव्यों को भव से तार दिया।।

थी कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी, तब योग निरोध किया प्रभुजी।
फिर अंतिम शुक्लध्यान छुआ, पावापुर से निर्वाण हुआ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपति श्री पद पूजते, मन वच काय त्रियोग।
मम 'विमर्श' चरणों यही, मिटे कर्म संयोग।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

अर्घावली

विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर का अर्घ

जल फल आठों दरब अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर - इन्द्रनिहूँ तैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जग तैं लेहु निकार।।
सीमंधर जिन आदि ले बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो भव-तारण तरण जिहाज।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ

सात करोड़ बहत्तर लाख सुभवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।
अब लख चौरासी सहस सन्तानवें, अधिके तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं, चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।

चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्दकंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है,
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता-विषै छाजै,
सातशत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सबै भाजै।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत इन दस क्षेत्रों में भूत-भविष्यत्-वर्तमान सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान् का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि! भवदु:ख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान् का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।।
श्रीचंदनाथ दुति चन्द, चरनन चंद लगे,
मन वच तन जजत अमंद, आतमजोति जगे।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान् का अर्घ

वसुद्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग-प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणा धारी, यातैं थारी, शरनारी।।

श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान् का अर्घ

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान् का अर्घ

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महाअतिवीर सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि भगवान् का अर्घ

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम भवलोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे बाहुबली! तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली–जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति तीर्थंकर भगवान् का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य–मल्लि–नेम, पारस वीर–अति।
नमूँ मन–वच–तन धरि प्रेम पाँचों बालयति।।
ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति–तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मन लाय।
परमगुरु हो, जय–जय नाथ परम गुरु हो।।
दरश–विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो, जय–जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करूँ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु–सम्बन्धि अशीति जिन–चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद–प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वरद्वीप का अर्घ

यह अरघ कियो निज–हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों।।
नन्दीश्वर द्वीप महान चारों दिशि सोहें।
बावन जिनमन्दिर जान सुर–नर–मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव–आताप निवार, दश–लक्षण पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

जल चन्दन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावे।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

शुभ भावों का निर्मल जल है, विनय भाव का है चंदन।
गुरु वंदन ही अक्षत है, भक्ति सुमन का अभिनंदन।।
मन वच तन से आत्म समर्पण, मोह क्षोभ का शमन करूँ।
परम पूज्य आचार्य शिरोमणि, विराग सिंधु जी को नमन करूँ।।

ॐ हूँ परम पूज्य शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विमर्शसागर जी का अर्घ

भावों का अर्घ चढ़ाने गुरु चरणों में आये हैं।
निज अनर्घ पद की चाह लिये झोली फैलाये हैं।
शुभ अर्घ्य चढ़ा जीवन में रत्नत्रय प्रगटायेंगे।
गुर विमर्श के गुणों की मंगल गीता गायेंगे।
गुरु की पूजा रचायेंगे, मंगल गीता गायेंगे।।

ॐ हूं परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।1।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रची गणी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।2।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजूँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।3।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरू नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूँ।4।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।5।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जयि होयं पति शिवगेह के ।6।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरू दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ बहु विधि भक्ति बढ़ाय ।7।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधुभ्यो, द्वादशांग जिनागमेभ्यो, दशलक्षण धर्मेभ्यो, षोडश कारणेभ्यो, सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो, त्रिलोक स्थित कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वर द्वीप स्थित द्विपंचाशत जिन चैत्यालयेभ्यो पंचमेरु स्थित अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो श्री सम्मेद - अष्टापद - ऊर्जयन्तगिरि - चम्पापुर - पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो सातिशय क्षेत्रेभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टाधिक जिन सहस्रनामेभ्यो, श्री वृषभादि चतुर्विन्शति तीर्थंकरेभ्यो जलादि महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ

शांतिनाथ मुख शशिउनहारी, शील गुण व्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम् तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमोंशांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ै तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

(बसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।।5।।

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को और यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्रसुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।
होवे सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।
होवै चोरी न जारी सुसमय बरतैं हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांतिकरो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।8।।
शास्त्रों का हो पठन, सुखदा लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।

बालूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तो लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।9।।
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।10।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।11।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।12।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिए)

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो काय।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरन होय।।1।।
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहुँ भगवान।।2।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।
आये जो-जो देवगण, पूजें भक्ति-प्रमाण।
ते सब जावहूँ कृपाकर, अपने-अपने थान।।4।।

(कायोत्सर्ग करोम्यहम्)

श्री जिनवर की आशिका, लीजै शीष चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।5।।

(गवासन मुद्रा से नमोस्तु करें)

निर्वाणकाण्ड भाषा

वीतराग वंदौं सदा, भाव सहित सिरनाय।
कहूँ कांड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चंपापुर नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव - भगति उर धार।।
चरम तीर्थंकर चरम - शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भाव सहित वन्दौं निश-दीस।।
वरदत्तराय रु इन्द मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वन्दौं भाव सहित कर जोड़ि।।
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
संबु प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसु पाय।।
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार।।
पाण्डव तीन द्रविड - राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजय-गिरि के सीस, भाव सहित वन्दौं निश-दीस।।
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि और हू भये।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल।।
राम हणू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान।।
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि - शीश ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईश।।
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा - तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।।
रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।

द्वै चक्री दश कामकुमार, उठकोड़ि वन्दौं भव पार।।
बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव - सागर - तर्ण।।
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मँझार।
चेलना - नदी - तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार।।
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।
वंसस्थल वन के ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रमाण।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुग पान।।
समवसरण श्रीपार्श्व - जिनन्द, रेसिन्दी गिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम - जिहाज।।
मथुरापुरी पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी गये निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मन वच काय सहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुण गाय।।
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाण काण्ड गुणमाल।।

।। इति निर्वाणकाण्ड।।

श्री महावीर चालीसा

शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन मन्दिर में धार।।
जय महावीर दयालु स्वामी, वीर प्रभु तुम जग में नामी।
वर्धमान है नाम तुम्हारा, लगे हृदय को प्यारा-प्यारा।।
शांति छवि और मोहनी मूरत, शान हँसीली सोहनी सूरत।
तुमने वेष दिगम्बर धारा, कर्म शत्रु भी तुमसे हारा।।
क्रोध मान और लोभ भगाया, माया ने तुमसे डर खाया।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनिया से क्या नाता।।
तुझमें नहीं राग और द्वेषा, वीतराग तू हित उपदेशा।
तेरा नाम जगत में सच्चा, जिसको जाने बच्चा-बच्चा।।
भूत प्रेत तुमसे भय खावें, व्यन्तर राक्षस सब भग जावें।
महा व्याध मारी न सतावे, महा विकराल काल डर खावे।।
काला नाग होय फनधारी, या हो शेर भयंकर भारी।
ना हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुम्हीं करो प्रतिपाला।।
अग्नि दवानल सुलग रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो।
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे, आग एकदम ठण्डी होवे।।
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी।।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी।।
पंचम काल महा दुखदाई, चाँदनपुर महिमा दिखलाई।
टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया।।
सोच हुआ मन में ग्वाले के, पहुँचा एक फावड़ा लेके।

सारा टीला खोद गिराया, तब तुमने दर्शन दिखलाया।।
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा।
ठण्डा हुआ तोप का गोला, तब सब ने जयकारा बोला।।
मंत्री ने मन्दिर बनवाया, राजा ने भी दरब लगाया।
बड़ी धर्मशाला बनवाई, तुमको लाने को ठहराई।।
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी, पहिया मसका नहीं अगाड़ी।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिर तो रथ चलता ही पाया।।
पहिले दिन वैशाख वदी के, रथ जाता है तीर नदी के।
मीना गूजर सब ही आते, नाच-कूद सब चित्त उमगाते।।
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का तुम मान बढ़ाया।
हाथ लगा ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही।।
मेरी है टूटी सी नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हूँ प्रभु तुम्हारा चाकर।।
तुम से मैं अरु कछु नहीं चाहूँ, जन्म-जन्म तेरे दर्शन पाऊँ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, वीर प्रभु को शीश नमावे।।

।। सोरठा।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने।।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले।।

जाप : ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

दीपावली को संध्याकाल में की जाने वाली आराधना, क्रिया-विधि

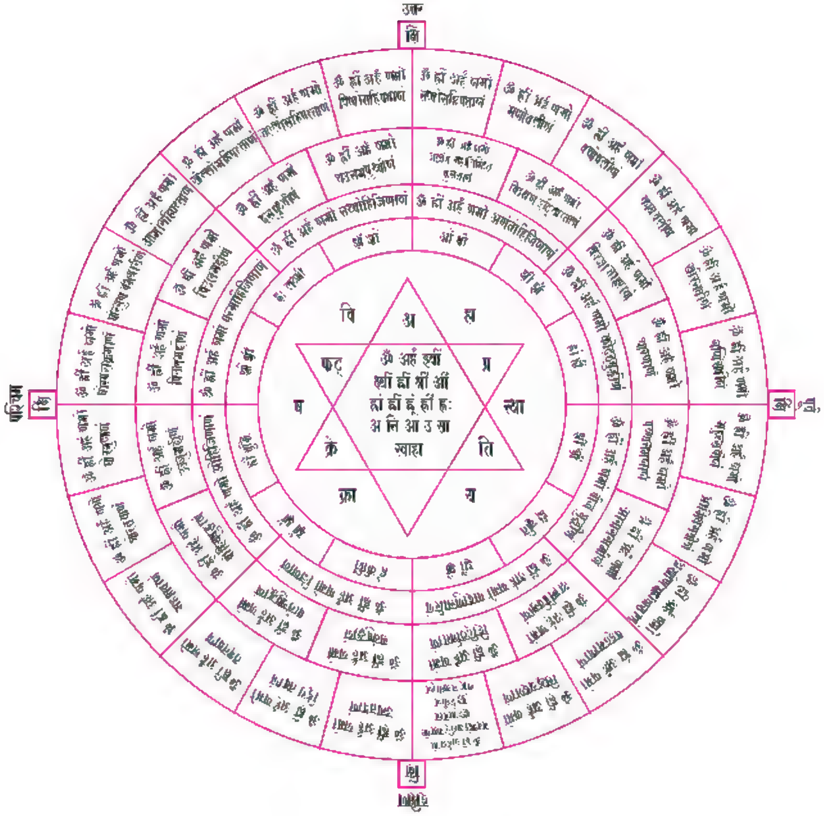

गणधरवलय यंत्र

श्री नवदेवता स्तोत्र-मंगलाष्टक

श्रीमन्तो जिनपा - जगत्त्रयनुता दोषै - र्विमुक्तात्मकाः।
लोकालोक विलोकनैक चतुराश्शुद्धाः परं निर्मलाः।।
दिव्यानन्त-चतुष्टयादिक युताः सत्य स्वरूपात्मकाः।
प्राप्तायै - र्भुवि प्रातिहार्य विभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

श्रीमन्तो नृ सुरा सुरेन्द्र महिता, लोकाग्र संवासिनः।
नित्याः सर्व सुखाकरा भयहरा, विश्वेषु कामप्रदाः।।
कर्मातीत विशुद्ध भाव सहिता, ज्योतिः स्वरूपात्मकाः।
श्री सिद्धा जननार्ति - मृत्यु-रहिताः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

पंचाचार परायणाः सुविमलाश्चारित्र संद्योतकाः।
अर्हद्रूप धराश्च निस्पृह पराः, कामादि दोषोज्झिताः।।
बाह्याभ्यन्तर-संग-मोह-रहिताः शुद्धात्म संराधकाः।
आचार्या नरदेव-पूजित-पदाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

वेदांगं निखिलागमं शुभतरं पूर्णं पुराणं सदा।
सूक्ष्मासूक्ष्म समस्त तत्त्व कथकं, श्रीद्वादशांगं शुभम्।।
स्वात्मज्ञान विवृद्धये गतमलाः येऽध्यापयन्तीश्वराः।
निर्द्वन्द्वावर पाठकाः सुविमलाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

त्यक्त्वाशां भव भोग पुत्रतनुजां, मोहं परं दुस्त्यजं।
निःसगां-करुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीधनाः।।
शुद्धाचार-रता निजात्म रसिका ब्रह्म स्वरूपात्मका।
देवेन्द्रैरपि पूजिताः सुमुनयः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

जीवानाम् भयप्रदः सुसदयः संसार - दुःखापहः।
सौख्यं योनितरां ददाति सकलं, दिव्यं मनोवाञ्छितम्।।
तीर्थेशै - रपि - धारितोह्यनुपमः स्वर्मोक्ष संसाधकः।
धर्मः सोऽत्र जिनोदितो हितकरः कुर्यात्सदा मंगलम्।।6।।

स्याद्वादांकधरं त्रिलोक महितं, दैवं सदा संस्तुतं।
सन्देहादि विरोधभाव रहितं सर्वार्थ सन्देशकम्।।
याथातथ्य - मजेय - माप्त कथितं, कोटि प्रभा भासितं।
श्री - मज्जैन सुशासनं हितकरं, कुर्यात्सदा मंगलम्।।7।।

सौम्याः सर्व विकार भाव रहिताः, शांति - स्वरूपात्मकाः।।
शुद्धध्यानमयाः प्रशान्त वदनाः, श्री प्रातिहार्यान्विताः।।
स्वात्मानन्द विकाशकाश्च सुभगाश्चैतन्य भावावहाः।
पञ्चानां परमेष्ठिनां हि कृतयः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

घण्टा तोरण दाम धूप घटकै, राजन्ति सन्मंगलैः।
स्तोत्रैश्चित्त - हरै - र्महोत्सव शतै - र्वादित्र संगीतकैः।।
पूजारम्भ महाभिषेक यजनैः, पुण्योत्करैः सत्क्रियैः।
श्री चैत्या - यतनानि तानि कृतिनां, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।9।।

इत्थं मंगल दायका जिनवरा सिद्धाश्च सूर्यादयाः।
पूज्यास्ता नव देवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारकाः।।
चारित्रो ज्वलतां विशुद्ध शमतां, बोधिं समाधिं-तथा।
श्री जैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखदं, कुर्वन्तु सन्मंगलम्।।10।।

(इति श्री नवदेवता स्तोत्र - मंगलाष्टक)

घर पर की जानेवाली केवलज्ञान लक्ष्मी पूजा विधि-

सर्वप्रथम स्मृति स्वरूप भगवान् महावीर स्वामी एवं गौतम स्वामी की तस्वीर रखकर फिर शुद्ध चौकी पर चारों शास्त्र (अनुयोग) विराजमान करें। एक पाटे पर अष्ट द्रव्य की थाली, तथा दूसरे पाटे पर द्रव्य चढ़ाने वाली थाली स्वास्तिक अंकित कर रखें। शास्त्र चौकी के दाहिनी ओर घी का दीपक बायीं ओर धूपदान तथा मध्य में मंगलकलश स्थापित करें।

यह सम्पूर्ण विधि गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया को परिवार सहित स्नानकर शुद्ध धोती-दुपट्टा पहनकर करना चाहिये।

पूजन विधि प्रारंभ करने से पूर्व नवदेवता मंगलाष्टक पढ़ें।

पूर्व या उत्तराभिमुख होकर बैठे सभी सदस्य निम्न प्रकार से पूजन विधि सम्पन्न करें।

सर्वप्रथम पूजन में बैठे सभी सदस्यों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

मंगलं भगवान् अर्हन्, मंगलं वृषभो जिनः।
मंगलं पूज्यपादार्यो, जिनागम पंथोस्तु तं।।

अब निम्न मंत्र पढ़कर सभी सदस्य हाथ में थोड़ा सा जल लेकर शुद्धि करें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

अब निम्न मंत्र पढ़कर दिग्बंधन करें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रौं, ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

अब निम्न मंत्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मंत्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप करें, एवं रक्षा सूत्र बाँधें–

ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः कलशे पूंगादि फलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्री फल रखने का मंत्र –

ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षें क्षौं क्षः नमो अर्हते भगवते श्री मते सर्व रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ ह्रीं श्री मज्जिनशासने भगवतो महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये मध्यलोके जम्बूद्वीपे सुदर्शन मेरौर्दक्षिणे भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे-भारत देशे.................... प्रदेशे.................. जिले................. नगरे .... वीर निर्वाण .... संवत्सर, मासोत्तम मासे................ पक्षे. .... तिथौ.................... वासरे संध्याकाले गौतम गणधर पूजायां भूमि शुद्यर्थं, पात्र शुद्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्य संचयार्थं, केवलज्ञान प्राप्त्यर्थं नवरत्न गंध पुष्पाक्षत श्री फलादि शोभितं शुद्ध प्रासुक जल प्रपूरितं मंगलकलश स्थापनं करोम्यहम् झ्वीं क्ष्वीं हं सः मंगलं भवतु स्वाहा। (स्वास्तिक पर स्थापित करें)

दीप प्रज्ज्वलन मंत्र–

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा अमावस्यां अज्ञान तिमिर हरं दीपकं प्रज्ज्वलामि।

धूप घट स्थापना मंत्र-

ॐ ह्रीं अष्टकर्म भस्मीकरणाय सर्व दिग्वात् सुगंधि करणाय दशांग धूप क्षेपणार्थं धूप घट स्थापनं करोमि स्वाहा।

शास्त्र स्थापन मंत्र–

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

(चारों अनुयोगों के शास्त्र स्थापित करें)

(भगवान् महावीर स्वामी के जयकारे के साथ पूजन प्रारंभ करें) मंगलाष्टक आदि विधि करने के बाद विनयपाठ की अंतिम लाइने बोलें।

विनय पाठ

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघ्न हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।

चौबीसौं जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधुनमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्।।

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हत् देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करों, वन्दों मन वच काय।।

मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवली पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

(ॐ नमोऽर्हते स्वाहा)

(परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अब निम्न विधि करें :

मंगल विधान—देखें पृष्ठ नं. 50

कल्याणक आदि अर्घ—देखें पृष्ठ नं 51

पूजा प्रतिज्ञा पाठ—देखें पृष्ठ नं. 52

स्वस्ति मंगल—देखें पृष्ठ नं. 53

परमार्षि स्वस्ति मंगल—देखें पृष्ठ नं. 53

यहां इन्हें अलग-अलग बोला जाना चाहिए, किन्तु यदि समय कम हो, तो सभी के नाम बोलकर पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए। उक्त क्रिया के बाद निम्नांकित अर्घ चढ़ाएँ

श्री देव शास्त्र गुरु का अर्घ

जल परम उज्जवल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ।

वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ।।

यह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूँ।।
वसु विधि अर्घ संजोय के, अति उछाह मनकीन।
जासों पूजो परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकर का अर्घ

जल फल आठों द्रव्य अर्घकर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्र निहूँ त्तैं थुति पुरी न करी है।।
द्यानत सेवक जानके हो जगते लेहु निकार।
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।

ॐ ह्रीं सीमन्धरादिविद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों।
तुमको अरपो भवतार भवतरि मोक्ष वरों।।
चौबीसों श्री जिनचंद आनन्दकन्द सही।
पद जजत हरत भव फंद पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरभ्यो अर्घं निर्व स्वाहा।

भगवान महावीर स्वामी का अर्घ

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, शुभ दीप धूप फल लाया हूँ।
आठो द्रव्यों का अर्घ बना, मैं कनकथाल भर लाया हूँ।।
दैदीप्य अर्घ अर्पित करता, स्वामिन्! अनर्घपद पाने को।
निर्दोष आत्मा प्रगटाऊँ, आया हूँ दोष मिटाने को ।।
चाहूँ एक अनर्घ्यपद, शुद्ध स्वरूप समान।
अर्घ्य लिये गुण पूजता, महावीर भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गौतम गणधर पूजा

(श्रमणाचार्य विमर्शसागर कृत)

दिन कार्तिक कृष्ण अमावस का, कल्याणक बनकर आया था।
निर्वाण हुआ महावीरा को, गौतम केवलि पद पाया था।।
भारत भू पर दीपावलि का, तब से शुभ पर्व महान हुआ।
प्रभु महावीर-गौतम के संग, भवि जीवों का कल्याण हुआ।।

दीपावली का शुभ दिवस आज, गौतम पद पुष्प चढ़ाता हूँ।
शुभ ज्ञानलक्ष्मी को ध्याकर, निज ज्ञान लक्ष्मी पाता हूँ।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं
(परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामः)

अति उज्जवल प्रासुक नीर कंचन कलश भरे।
मिल जाये प्रभु भवतीर चरणन अग्र धरे।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन गोशीर कपूर केसर घिस लाये।
मिट जाये प्रभु भवताप, पूजैं गुण गाये।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि के सम तन्दुल श्वेत, पूर्ण सुबीन करे।
प्रभु अक्षय पद के हेत, पदतर आन धरे।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दार नमेरू आदि सुरद्रुम सुमनन सौं।
नाशन कामादिक भाव पूजैं प्रभु! मनसौं।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन नैवेद्य थाल भरा लाये।
निज क्षुधा विनाशन हेत पूजन को आये।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीपक ज्योति प्रकाश मैंटे तम कारा।
हो मोहतिमिर का नाश सम्यक् उजियारा ।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर चन्दन लौंग धूप दशांग बना।
खेवत हों अग्नि माहिं दहके कर्म घना।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुआरा दाख उत्तम फल प्रभुजी।
लाये पूजन को आज, दो शिवफल प्रभुजी।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु द्रव्य मिलाय तव गुण ध्यावत हों।
अष्टम् अवनि को पाय सिर को नावत हों।।
जय जय श्री गौतम देव तुम तो ज्ञायक हो।
हमको ज्ञायक की चाह तुम मम् नायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर अर्घ्य

श्रावण कृष्णा एकम् को, चकचूरा मान अहम् को।
वीरा का दर्शन पाया, बन गणधर सार सुनाया।।

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि प्राप्तये गौतम स्वामी जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कार्तिक कृष्ण अमावस, तुम चार घातिया को नश।
निज ज्ञान श्री प्रगटाई, संध्या बेला सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञान प्राप्तये गौतम स्वामी जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जब योग निरोध किया जी, तब शुक्ल ध्यान लिया जी।
हुआ पावन क्षेत्र गुणावा, निर्वाण महापद पावा ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी जिनेन्द्राय मोक्षपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(तर्ज - हे दीनबंधु........)

द्वीपों में द्वीप एक जम्बुद्वीप कहा है,
क्षेत्रों में क्षेत्र एक भरतक्षेत्र महा है।
इसमें भी आर्यखंड का प्रभुत्व जानिये,
भारत के नाम से प्रसिद्ध देश जानिये।।

भारत में मगध देश जो अतिशय महान था,
वसुभूति-पृथ्वी ब्राह्मण का श्रेष्ठ नाम था।
इनके ही पुत्र इन्द्र अग्नि वायुभूति थे,
वेदान्त विद्या के धनी अद्भुत् विभूति थे।।

वैशाख सुदी दसमी वीर ज्ञान को पाया,
धनपति ने आके शीघ्र समवसरण रचाया।
द्वादश सभा प्रभु को निहारें आश से भरी ,
छ्यासठ दिवस प्रभू की देशना नहीं खिरी।।

चिन्तित सा हुआ इन्द्र अवधिज्ञान से जाना,
गणधर न प्रभू की सभा में इन्द्र ने माना।
गणधर बनेंगे इन्द्रभूति ज्ञान में आया,
धर वृद्ध वेष इन्द्र, जा श्लोक सुनाया।।

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं नवपद सहितं जीवषट्कायलेश्या:।
पञ्चान्ये चास्तिकाया व्रत समिति गति ज्ञान चारित्र भेदा:।।

हे देव! इसका अर्थ हमें शीघ्र बताओ,
महावीर प्रभु मौन हैं तुम राह दिखाओ।
सुनकर ये इन्द्रभूति की कुछ समझ न आया,
महावीर को बतलाऊँगा कह पैर बढ़ाया।।

ले इन्द्र, इन्द्रभूति को पहुँचा समवसरण,
देखा जो मानस्तंभ मान का हुआ क्षरण।
महावीर प्रभु का निर्विकारी रूप जो लखा,
अपलक निहारता रहा आनन्द रस चखा।।

होकर मुनि दिगम्बर गणधर प्रथम हुये,
प्रभु! अष्ट ऋद्धि चार ज्ञान धारी तुम हुये।
श्रावण बदी एकम् को वीर देशना खिरी,
प्रभु! द्वादशांग रूप रचना आपने ही की।।

फिर अग्नि-वायुभूति साथ शिष्य मण्डली,
महावीर प्रभु को जीतने वो हर्ष से चली।
सुनकर के वीर वाणी मुनि रूप को धरा,
जीता स्वयं, स्वयं को रहा मान न जरा।।

शुचिदत्त, मौर्यपुत्र, माण्डव्य, अकम्पन,
मेदार्य व अचल प्रभास सुधर्म मुनीजन।
इन ग्यारह गणधरों से सुशोभित हुई सभा,
महावीर की फैली थी अलौकिक अहा प्रभा।।

भव्यों को तीस वर्ष प्रभु देशना मिली,
मिथ्यात्व हुआ नाश खिली ज्ञान की कली।
पावापुरी से वीर को निर्वाण जब हुआ,
संध्या में आपको भी पूर्णज्ञान तब हुआ।।

हे नाथ! बानवे वर्ष थी आयु आपकी,
श्री क्षेत्र गुणावा से हुई मुक्ति आपकी।
हे देव! हमें पूर्णज्ञान मुक्ति दीजिये,
भव सिंधु में भटकूँ नहीं कल्याण कीजिये।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी जिनेन्द्राय जयमालायै पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवान के, गणधर प्रथम महान।
पुष्पांजलि चरणा धरूँ, पाने ज्ञान निधान।।

(परि पुष्पांजलिं क्षिपामः)

भगवान गौतम स्वामी की पूजन के पश्चात् अब श्री सरस्वती पूजन भी भक्ति भाव से करें।

सरस्वती पूजन के लिये चारों अनुयोगों के शास्त्र रखें और माँ जिनवाणी को नमन करके विनयपूर्वक पूजन प्रारंभ करें।

सरस्वती पूजा

(द्यानतराय कृत)

जनम-जरा-मृत्यु छय करै, हरै कुनय जड़ रीति।
भवसागर सों ले तिरै, पूजैं जिन वच प्रीति।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वति वाग्वदिनि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वति वाग्वदिनि! अत्र तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वति वाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छीरोदधि गंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुख-संगा।
भरि कंचन झारी धार निकारी, तृषा निवारी हित चंगा।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

करपूर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी।
शारद पद वन्दौं मन अभिनन्दों, पाप निकंदों दाह हरी।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चन्दसमं।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मात ममं।।

तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

बहु फूल सुवासं विमल प्रकाशं, आनंदरासं लाय धरे।
मम काम मिटाओ शील बढ़ाओ, सुख उपजायौ दोष हरे।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाया बहुघृत लाया, सब विध भाया मिष्टमहा।
पूजूँ थुति गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ क्षुधा नसाऊँ हर्ष लहा ।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करि दीपक जोतं तम छय होतं ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुम हो परकाशक भरमविनाशक हम घट भासक ज्ञान बढ़ै ।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध दशों कर पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावैं पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं ।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारी लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं ।
मन वांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनन सुखकारी मृदु गुनधारी उज्ज्वल भारी मोल धरै।
शुभ गंध सम्हारा वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करै।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरु,अरु दीप धूप अतिफल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर-वानी शिव-सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्‌भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै।।
पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरुभाषं।।
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं चौसठ सहस लाख इक धारं।।
पंचम व्याख्याप्रज्ञप्ति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं।।

सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अन्तकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं।।
नवम अनुत्तर दश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरावन सोल हजारं।।
ग्यारम सूत्र विपाक सुभाखं, एक कोड़ि चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु शाखं।।
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं।।
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने।।
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढ़े इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये।।
जा वानी के ज्ञान तें, सूझे लोकालोक।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हूँ धोक।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै: अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इत्याशीर्वाद)

चौसठ ऋद्धि अर्घ (चौसठ अर्घ चढ़ावें)

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं मन:पर्ययज्ञान बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठज्ञान बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं दूरास्वादित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं दूर श्रवणत्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं दूर दर्शित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्त बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अणिमा विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं महिमा विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं लघिमा विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं गरिमा विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं प्राप्ति विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं प्रकाम्य विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं ईशत्व विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं वाशित्व विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अप्रतिघात विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अंतर्धान विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं कामरूप विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारण विक्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं जलचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं जंघाचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

34. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं मेघधाराचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं तंतुचारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं मरुच्चारण क्रियाऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं महातपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं घोरपराक्रम तपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
49. ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
50. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा
51. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
52. ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
53. ॐ ह्रीं विष्ठौषधिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
54. ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
55. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
56. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
57. ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
58. ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

59. ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

60. ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

61. ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

62. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

63. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

64. ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अब यहाँ 16 दीपकों में 64 ज्योति प्रज्ज्वलित करके गणधर वलय स्तोत्र अथवा गणधर चालीसा पढ़ें, और बाद में सभी लोग बैठकर जिनवाणी को नमस्कार करें।)

गणधर वलय स्तोत्र

जिनान् जिताराति – गणान् गरिष्ठान्, देशावधीन् सर्व – परावधींश्च।
सत् – कोष्ठ – बीजादि पदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।1।।

संभिन्न – श्रोतान्वित – सन् – मुनीन्द्रान्, प्रत्येक – सम्बोधित – बुद्ध – धर्मान्।
स्वयं – प्रबुद्धांश्च विमुक्ति मार्गान्, स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।2।।

द्विधा मनः पर्यय-चित् – प्रयुक्तान्, द्विपंच – सप्तद्वय – पूर्व – सक्तान्।
अष्टांग – नैमित्तिक शास्त्र दक्षान्–स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।3।।

विकुर्वणाख्यर्द्धि – महा – प्रभावान्, विद्याधरांश्चारण –ऋद्धि – प्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान् नित्य – ख – गामिनश्च–स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।4।।

आशीर्विषान् दृष्टि – विषान् मुनीन्द्रा–नुग्राति – दीप्तोत्तम – तप्त – तप्तान्।
महातिघोर – प्रतपः प्रसक्तान्, स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।5।।

वन्द्यान् सुरैर्घोर-गुणांश्च लोके, पूज्यान् बुधैर्घोर-पराक्रमांश्च।
घोरादि-संसद्-गुण ब्रह्म युक्तान्, स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।6।।

आमर्द्धि–खेलर्द्धि–प्रजल्ल–विडर्द्धि, सर्वर्द्धि–प्राप्तांश्च व्यथादि हंतॄन्।
मनो–वचःकाय बलोपयुक्तान् स्तुवे गणेशानपि तद् – गुणाप्त्यै।।7।।

सत्क्षीर सर्पिर्मधुरा-मृतर्द्धीन्, यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।
प्रवर्धमानांस्त्रि-जगत्-प्रपूज्यान्, स्तुवे गणेशानपि तद् - गुणाप्त्यै।।8।।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽति-वीरान्, श्री वर्धमानर्द्धि विबुद्धि दक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा-नृषीन्द्रान्, स्तुवे गणेशानपि तद् - गुणाप्त्यै।।9।।

नृ - सुर - खचर सेव्या, विश्व श्रेष्ठर्द्धि - भूषा,
विविध - गुण - समुद्रा मार मातंग - सिंहाः।
भवजल - निधि पोता वंदिता मे दिशन्तु,
मुनिगण सकलाः श्री सिद्धिदाः सदृषीन्द्राः ।।10।।

नित्यं यो गण - भृन्मंत्र, विशुद्ध सन् जपत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुण्यानां, निर्जरा पाप कर्मणाम्।।11।।

नश्यादुपद्रव कश्चिद, व्याधिभूत विषादिभिः।
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो।।12।।

इतिश्री गणधर वलय स्तोत्र

गणधर वलय स्तोत्र

(पद्यानुवाद - श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

जीत लिये सब घाति आराति, ऐसे श्री जिनेन्द्र भगवान्,
देशावधि, सर्वावधि, परमावधि धारी गुणश्रेष्ठ महान्।
कोष्ठ, बीज, पादानुसारि ऋद्धिधारी श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।1।।

महाऋद्धि संभिन्नश्रोतृ के धारी सब भाषाविद् बुद्ध,
स्वयंबुद्ध, प्रत्येक-बुद्ध, उपदेश प्राप्त जो बोधित बुद्ध।

स्वामी सच्चे मुनियों के शिवमार्ग धर्म के गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।2।।

ऋजु-विपुलमति ज्ञान-मनःपर्यय द्वि-विध इनके धारी,
जो दस पूरब के धारी हैं चौदह पूरब के धारी।
महानिमित्त अष्टांग के ज्ञाता शास्त्रदक्ष जो गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।3।।

महाप्रभावक नाम विक्रिया ऋद्धि के जो हैं धारक,
महाप्रज्ञ, चारण ऋद्धि को प्राप्त, महाविद्या धारक।
सदा मध्य आकाश गमन करनेवाले श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।4।।

आशीविष-दृष्टिविष ऋद्धि धारी हैं जो महाश्रमण,
दीप्तोत्तम-अति उग्र-तप्त तप-ऋद्धि करें जो मुनि धारण।
और महा अतिघोर परम तप धारक हैं जो गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।5।।

लोक पूज्य, देवों से वंदित, घोर गुणों के जो धारक,
जो बुधजन से पूज्य लोक में घोर पराक्रम के धारक।
सम्यक् श्रेष्ठ अघोर ब्रह्म-गुण-धारी जितने गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।6।।

आमर्द्धि, खेलर्द्धि, विडर्द्धि परम जल्ल ऋद्धिधारी,
सर्वऋद्धि को प्राप्त महामुनि पीड़ाहर अति उपकारी।
काय-वचन-मनबल ऋद्धि से युक्त सभी श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।7।।

जो अक्षीण महानस - वर संवास ऋद्धि क्षीरस्रावी,
समीचीन सर्पिस्रावी, मधुरस्रावी, अमृतस्रावी।
अहा ! सुशोभित तीन लोक में पूज्य यति श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।8।।

सिद्धालय में राजित जो श्री अतिमहान अतिवीर अहा,
वर्द्धमान ऋद्धि, विशिष्ट बुद्धि ऋद्धि में कुशल महा।
मुक्ति लक्ष्मी वरण करें सब मुनि, ऋषिगण या गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।9।।

सेवित मनुज देव खचरों से, गुण समुद्र, वर ऋद्धिवान्,
कामदेव रूपी हाथी को वश में, करने सिंह समान।
जो संसार समुद्र पार, करने हैं उत्तम पोत समान,
वन्दित मुनिगण इन्द्र श्री गणधर, मुझे सिद्धपद करें प्रदान।।10।।

गणधर वलय मन्त्र को पढ़ता जो प्रतिदिन विशुद्ध मन से,
आस्रव होता पुण्यकर्म का पापकर्म निर्जर उनके।
भूत-पिशाच, रोग विष व्याधि दूर सभी होती बाधा,
दिखते स्वप्न शुभाशुभ मृत्यु-समय समाधि-मरण पाता।।11।।

हो 'विमर्श' सबके हृदय, कर्मों का हो नाश।
चिदानंद रसपान कर, पाऊँ आत्म निवास।।

(इतिश्री गणधरवलय स्तोत्र)

श्री गणधर चालीसा

(रचयिता – श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

वीतराग गणपति नमूँ, दीपावलि दिन आज।
ज्ञान ज्योति से मोह का, मिट जाये साम्राज।।
दीपावलि का शुभ दिवस, चालीसा जो ध्याय।
चारों गति से छूटकर, पंचम गति को पाय।।

जय जय जय श्री गणधर देवा, सुर नर उरग करें नित सेवा।
ऋद्धि-सिद्धि सब सुख के दाता, जगत आपकी महिमा गाता।।
गण-स्वामी गणपति कहलाते, गण के ईश गणेश कहाते।
नाथ! आप गणनाथ कहाते, गण-धरते गणधर कहलाते।।
अष्ट ऋद्धियों के हो स्वामी, तीर्थंकर के हो अनुगामी।
अक्षर और अनक्षर भाषा, बहुजन मुख निर्गत बहुभाषा।।
श्रोतृ ऋद्धि से आप जानते, जन-जन भाषा में बखानते।
चारण गुण से गगन विचरते, अणिमा आदि आठ गुण धरते।।
ऋषभदेव गणधर चौरासी, अजितनाथ नब्बे सन्यासी।
शतक एक-पच हैं संभव विभु, एक शतक-त्रय अभिनन्दन प्रभु।।
सुमतिनाथ पंचम तीर्थंकर, एक शतक सोलह जिन गणधर।
शतक एक ग्यारह गण स्वामी, पद्मप्रभु के हैं जिनगामी।।
प्रभु सुपार्श्व गणधर पिचानवे, चन्द्रप्रभु गणधर तिरानवे।
सुविधिनाथ गणधर अट्ठासी, प्रभु शीतल गणधर सत्तासी।
प्रभु श्रेयान्स गणनाथ सतत्तर, वासुपूज्य प्रभु छ्यासठ गणधर।
विमलनाथ जिन गणधर पचपन, अर्धशतक गणि हैं अनंत जिन।
तैंतालीस धर्म गणनाथा, छत्तिस शान्ति झुकावें माथा।
कुंथुनाथ गणधर पैंतीसा, अरहनाथ गणधर जिन तीसा।।

मल्लिनाथ अट्ठाइस गणेशा, मुनिसुव्रत अट्ठारह ईशा।
हैं सत्रह गणपति नमिनाथा, ग्यारह नेमिनाथ गणनाथा।।
पार्श्वनाथ गणधर दस स्वामी, सन्मति ग्यारह अन्तर्यामी।
एक हजार चार सौ उनसठ, सब गणधर हैं भवसागर तट।।
समवसरण में अहा विराजे, द्वादश सभा आपसे साजै।
दिव्यध्वनि को आप झेलते, द्वादशांग में आप खेलते।।
सब जीवों की शंका हरते, किंतु हृदय शंका न धरते।
मोक्षमार्ग सबको दिखलाते, चारों ही अनुयोग सुनाते।।
निश्चय से मुक्ति पथ गाया, प्रभु साधन व्यवहार बताया।
शुद्धातम का अनुभव करते, गुणस्थान में झूला करते।।
जो भवि तुम्हें हृदय से ध्याता, नाथ !, आप सम ही बन जाता।
कर्मनाश विधि तुमने पाई, चेतनता चिद्रूप समाई।।
धन्य-धन्य प्रभु गौतमस्वामी, वीतरागता अति अभिरामी।
महावीर मुक्ति पद पाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मावस में भी पूनम आई, तीन लोक में खुशियाँ छाई।
देवों ने तब उत्सव कीना, धन्य हुआ कार्तिकी महीना।।
भारत में दीपावलि आई, गुरु-शिष्य की महिमा गाई।
प्रभु ने मोक्षलक्ष्मी पाई, ज्ञानलक्ष्मी तुम प्रगटाई।।
मोक्ष-ज्ञान लक्ष्मी जो ध्याता, वो इसभव परभव सुख पाता।
दीन कोई धन लक्ष्मी ध्यावे, दुःखकारी मिथ्यात्व बढ़ावे।।
भव-भव प्रभु हम तुमको ध्यावें, भव-भव के दुःख शीघ्र नशावें।
हो सम्यग्दर्शन सुखकारी, चरण-शरण यह विनत हमारी।।

गणधर चालीसा सदा, जो भवि पढ़े-पढ़ाय।
रोग-शोक संकट कटे, दीपावलि शुभ पाय।।
महावीर की आरती, गणधर प्रभु गुणगान।
दीपावलि को जो करे, हो 'विमर्श' वरदान।।

श्री महावीर स्वामी

(आरती)

जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ।। ॐ जय ..।।

सिद्धारथ घर जन्में, वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत पाल्यौ तपधारी ।। ॐ जय ..।।

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी।। ॐ जय ..।।

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो ।। ॐ जय ..।।

इह विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूरयो दूध गाय पायौ।। ॐ जय ..।।

अमर चन्द को सपना, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ॐ जय ..।।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ।। ॐ जय ..।।

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।
होय मनोरथ पूरण, संकट मिट जावै।। ॐ जय ..।।

निश दिन प्रभु मन्दिर में जगमग ज्योति जरै।
हम सेवक चरणों में, आनन्द मोद भरै।। ॐ जय ..।।

[redacted]

पंच परमेष्ठी आरती

(रचयिता-श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू-बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

पहली आरति अरिहंताणं-2
कर्म घातिया चउ णासाणं-2
चारों गुण पाने गुण वंदना करूँ, हाथों में...।

दूसरी आरति सिरि सिद्धाणं-2
पाने मुक्तिफलं णिव्वाणं-2
आठों गुण पाने गुण वंदना करूँ, हाथों में...।

तीसरी आरति आइरियाणं-2
पंचाचार निपुण समणाणं-2
बोधि गुण पाने गुण वंदना करूँ, हाथों में...।

चौथी आरति उवज्झायाणं-2
पच्चिस गुण धारी अप्पाणं-2
ज्ञान गुण पाने गुण वंदना करूँ, हाथों में...।

पाँचवीं आरति सव्व साहूणं-2
ज्ञान ध्यान तप लीन गुरूणं-2
समता गुण पाने गुण वंदना करूँ, हाथों में...।

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुँघरू-बाजे घुँघरू,
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ।

[redacted]

जिनवाणी स्तुति

(रचयिता-श्रमणाचार्य विमर्शसागर)

माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
भव सागर से तारण हारी, ओ जिनवाणी माँ-2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
शरणा में तेरी, जो भी आता है
सच्ची सुखशान्ति, वो नर पाता है
खुशियाँ मिलती हैं, जीवन में हरपल
यादें रहती हैं, चेतन की पलपल
भव-भव में भी हो उपकारी, ओ जिनवाणी माँ-2
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
सात तत्व, छह द्रव्य, महिमा बतलाती
तू ज्ञायक प्रभु है, हमको सिखलाती
बंध-आतम में, अन्तर बतलाया
भेदज्ञान करना, हमको सिखलाया
बना दिया है आत्मबिहारी, ओ जिनवाणी माँ
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2
आतम अनुभव की लोरी गाती हो
जन्म-जरा मृत्यु, रोग नशाती हो
माँ जग में तुझ सा, कोई न हितकारी
वीतराग विज्ञान तेरी बलिहारी
तीर्थंकर मुख से अवतारी, ओ जिनवाणी माँ
तू है हमको सबसे प्यारी, ओ जिनवाणी माँ
माँ-ओ माँ, माँ-ओ माँ-2

जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन

के अंतर्गत

जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महाराज

स्थापना ग्रंथमाला : 15 नवम्बर 2018, विमर्श उत्सव

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

कहो गर्व से हम जिनागम पंथी हैं।

ISBN:978-93-6013-837-0
9 789360 138370

सच्चे जैन का एक ही पंथ-जिनागम पंथ

जयदु जिणागम पंथो

जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवा:

शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।

(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

NOT FOR SALE